I

चश्म-ए-मसीही

(ईसाइयत का स्त्रोत)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: चश्म-ए-मसीही (ईसाइयत का स्रोत)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद तथा फ़रहत अहमद आचार्य
टाइप, सैटिंग	: फ़रहत अहमद आचार्य
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) सितम्बर 2020 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Chashm-e-Masihi (Fountain of Christianity)
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Dr Ansar Ahmad & Farhat Ahmad Acharya
Type Setting	: Farhat Ahmad Acharya
Edition	: 1st Edition (Hindi) September 2020
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "चश्म-ए-मसीही (ईसाइयत का स्रोत)" का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद और श्री फ़रहत अहमद आचार्य ने किया है। तत्पश्चात श्री शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), श्री फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), श्री अली हसन एम. ए., श्री नसीरुल हक़ आचार्य, श्री इब्नुल मेहदी एम. ए. और श्री सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अल्लाह उनका सहायक हो (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

नोट- पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावाली भी दी गई है पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।

प्रकाशक

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

IV

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से पैदा कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत[1] लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही

1 **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

चश्म-ए-मसीही

यह पुस्तक मार्च 1906 ई० की लिखी हुई है। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने बांस बरेली के एक मुसलमान के प्रबोधन पर ईसाइयों की प्रसिद्ध पुस्तक "यनाबीउल इस्लाम" का यह उत्तर लिखा है। "यनाबीउल इस्लाम" के लेखक ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि पवित्र क़ुरआन में कोई नई शिक्षा नहीं बल्कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नाऊज़ुबिल्लाह पहले नबियों की पवित्र किताबों से चोरी करके क़ुरआन शरीफ़ को तैयार किया है।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस पुस्तक का उत्तर लिखते हुए इसमें यहूदी उलमा के हवालों से यह सिद्ध किया है कि इंजील शब्दश: तालमूद से नक़ल की गई है। और इसी प्रकार एक हिंदू ने यह सिद्ध किया है कि इंजील बुद्ध जी की शिक्षा की चोरी है और स्वयं यूरोप के ईसाई अन्वेषकों ने लिखा है कि इंजील की बहुत सी बातें और उदाहरण 'यूज़ आसफ' की पुस्तक से मिलती हैं। तो क्या अब मसीह की शिक्षाओं को भी चोरी किया हुआ ही क़रार दिया जाए। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने लिखा है कि असल बात यह है कि क़ुरआन करीम का अगर कोई हिस्सा पूर्व धार्मिक पुस्तकों से मिलता है तो यह ख़ुदा तआला की वह्यी से समानता है अन्यथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो केवल अनपढ़ थे और अरबी भी नहीं पढ़ सकते थे, कहाँ

यह कि यूनानी और इबरानी।

पवित्र क़ुरआन एक जीता-जागता चमत्कार होने का दावा करता है और उसमें जो पुरानी ख़बरें और किस्से हैं वे भी अपने अंदर भविष्यवाणियों का रंग रखते हैं और फिर उसकी सरसता और सुबोधता भी ऐसा चमत्कार है कि आज तक कोई उसका उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सका।

इसके बाद हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने वर्तमान ईसाइयत की आस्थाओं तस्लीस (तीन ख़ुदाओं को मानना), मसीह को ख़ुदा बनाना और कफ्फ़ारा आदि का रद्द प्रस्तुत किया है और क्षमा और प्रतिशोध के बारे में इस्लाम तथा ईसाइयत की शिक्षाओं की परस्पर तुलना की है। चश्म-ए-मसीही के उपसंहार के तौर पर एक भाग वास्तविक मुक्ति के नाम से सम्मिलित किया है जिसमें हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह सिद्ध किया है कि ईसाइयों के निकट मुक्ति के अर्थ यह हैं कि इंसान गुनाह की पकड़ से रिहाई पा जाए। यह सीमित और नकारात्मक अर्थ हैं। वास्तव में मुक्ति शाश्वत खुशहाली के प्राप्त करने का नाम है जो ख़ुदा तआला की मोहब्बत और मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) और उसके संबंध से प्राप्त होती है। मारिफ़त की बुनियाद इस बात पर है कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं का सही ज्ञान हो। ईसाइयत की आस्थाएं तस्लीस और मसीह को ख़ुदा बनाना, वास्तविक मारिफ़त के विपरीत हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने सिद्ध किया है कि ईसाइयत की वर्तमान आस्थाओं का ख़ुदा के नबी हज़रत ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम से कोई संबंध नहीं, यह सब पौलूस के दिमाग़ की पैदावार है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

इस विनीत की ओर से अभिव्यक्त योग्य विज्ञापन

भूकम्प की भविष्यवाणी से संबंधित

दोस्तो! जागो कि अब फिर ज़लज़ला आने को है,
फिर ख़ुदा क़ुदरत को अपनी जल्द दिखलाने को है।
वह जो माह-ए-फरवरी में तुमने देखा ज़लज़ला,
तुम यक़ीं समझो कि वह इक ज़ज्र समझाने को है।
आँख के पानी से यारो कुछ करो इस का इलाज,
आसमां ए ग़ाफ़िलो! अब आग बरसाने को है।
क्यों न आवें ज़लज़ले तक़्वा की रह गुम हो गई,
इक मुसलमाँ भी मुसलमाँ सिर्फ कहलाने को है।
किस ने माना मुझको डर कर, किस ने छोड़ा बुग़ज़-ओ-कीं,
ज़िंदगी अपनी तो उन से गालियां खाने को है।
काफ़िर-ओ-दज्जाल और फ़ासिक़ हमें सब कहते हैं,
कौन ईमां सिद्क़ और इख़लास से, लाने को है।
जिसको देखो बद-गुमानी में ही हद से बढ़ गया,
गर कोई पूछे तो सौ-सौ ऐब बतलाने को है।
छोड़ते हैं दीं को और दुनिया से करते हैं प्यार,
सौ करें वाज़-ओ-नसीहत कौन पछताने को है।

हाथ से जाता है दिल, दीं की मुसीबत देखकर,
पर ख़ुदा का हाथ अब इस दिल को ठहराने को है।
इसलिए अब ग़ैरत उस की कुछ तुम्हें दिखलाएगी,
हर तरफ़ ये आफ़त-ए-जां हाथ फैलाने को है।
मौत की रह से मिलेगी अब तो दीं को कुछ मदद,
वर्ना दीं ए दोस्तो! इक रोज़ मर जाने को है।
या तो इक आलम था क़ुरबाँ उस पे, या आए ये दिन,
एक अब्द-उल-अब्द भी इस दीं को झुठलाने को है।

विज्ञापन दाता
मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद
9 मार्च 1906 ई०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

चश्म-ए-मसीही ★

(मसीहियत का स्त्रोत)

वह किताब जिसका मैंने शीर्षक में चश्म-ए-मसीही नाम रखा है, वास्तव में वह यही किताब है जिसको हम आगे लिखेंगे। हमें कुछ आवश्यकता न थी कि आदरणीय पादरी साहिबों के बारे में कुछ लिखते क्योंकि इन दिनों में उनके विद्वान यूरोप और अमरीका के वैज्ञानिकों ने वह काम स्वयं अपने हाथ में ले लिया है जो हमें करना चाहिए था और वे लोग इस कार्य को भाली-भांति कर रहे हैं कि ईसाई धर्म क्या चीज़ है और उस की असलीयत किया है। मगर इन दिनों में बाँस बरेली से एक नावाक़िफ़ मुस्लमान का मुझको पत्र पहुंचा है और वह अपने पत्र में किताब यनाबी-उल-इस्लाम के बारे में जो एक ईसाई की किताब है, एक भयानक क्षति का इज़हार करते हैं। अफ़सोस कि अक्सर मुसलमान अपनी ग़फ़लत की वजह से हमारी किताबों को नहीं देखते और वह बरकतें जो ख़ुदा तआला ने हम पर उतारीं ये लोग बिलकुल उससे बेख़बर हैं। और नादान मौलवियों ने हमें काफ़िर-काफ़िर कह कर हम में तथा सामान्य मुसलमानों में एक दीवार खींच दी है। इन लोगों को मालूम नहीं कि अब वह ज़माना जाता रहा कि जिसमें ईसाइयत के षड्यंत्र

★ इस नाम के ये अर्थ नहीं हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम का यह चश्मा (स्त्रोत) है क्योंकि मसीह अलैहिस्सलाम की शिक्षा जो दुनिया से गुम हो गई वह मौजूदा आस्था नहीं सिखाती थी बल्कि यह मसीही (अर्थात ईसाई) लोगों की स्वयं निर्मित शिक्षा है इसलिए इसका नाम चश्म-ए-मसीही रखा गया।

कुछ काम करते थे। और अब छटा हज़ार आदम की पैदाइश से लेकर अपने अंत पर है जिसमें ख़ुदा के सिलसिला को विजय प्राप्त होगी और प्रकाश तथा अंधकार में ये आख़िरी जंग★ है जिसमें प्रकाश की विजय हो जाएगी और अंधकार का अंत है। और कुछ आवश्यक न था कि पादरी साहिबों के इन घिसे-पिटे विचारों पर कुछ लिखा जाता लेकिन एक व्यक्ति के आग्रह से जिनका वर्णन ऊपर किया गया है यह छोटी सी पुस्तक लिखनी पड़ी है। ख़ुदा तआला इस में बरकत डाले और लोगों की हिदायत का पात्र बनाए। आमीन

और याद रहे कि हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की इज़्ज़त करते हैं और उनको ख़ुदा तआला का नबी समझते हैं* और हम इन यहूदियों के उन आरोपों के विरोधी हैं जो आजकल प्रकाशित हुए हैं मगर हमें ये दिखलाना मंज़ूर है कि जिस तरह यहूद केवल पक्षपात से

★ इस जंग के लफ़्ज़ से ये नहीं समझना चाहिए कि तलवार या बंदूक़ से यह जंग होगी। कारण यह है कि अब इस प्रकार के जिहाद ख़ुदा तआला ने मना कर दिए हैं क्योंकि ज़रूरी था कि मसीह मौऊद के समय में इस प्रकार के जिहाद मना किए जाते जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ ने पहले से यह ख़बर दी है और सही बुख़ारी में भी मसीह मौऊद के बारे में यह हदीस है कि 'यज़उल हर्ब' (अर्थात वह जंग को स्थगित कर देगा) इसी से।

---

* हमारे क़लम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में जो कुछ उनकी शान के खिलाफ निकला है वह इल्ज़ामी जवाब के रंग में है और वह वास्तव में यहूदियों के शब्द हमने नक़ल किए हैं। अफ़सोस अगर पादरी साहिबान सभ्यता और संयम से काम लें और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां न दें तो दूसरी ओर मुसलमानों की तरफ़ से भी उन से बीस गुना अधिक शिष्टाचार का ध्यान रहे। इसी से।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उन की इंजील पर हमले करते हैं इसी रंग के हमले ईसाई क़ुरआन शरीफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर करते हैं। ईसाइयों के लिए यह उचित न था कि इस बुराई में यहूदियों का अनुसरण करते लेकिन यह नियम है कि जब इन्सान सच्चाई और इन्साफ़ की दृष्टि से किसी धर्म पर हमला नहीं कर सकता तो बहुत से ऐसे लोग होते हैं कि झूठे आरोपों के द्वारा हमला करना शुरू कर देते हैं। अत: ऐसे ही यनाबी-उल-इस्लाम के लेखक के हमले हैं। सांसारिक मोहमाया से ये ख़राब आदतें पैदा होती हैं अन्यथा इस ज़माने में आसमानी धर्म केवल इस्लाम ही है जिसकी ताज़ा बरकतें मौजूद हैं। और ये इस्लाम के पवित्र स्रोत की ही बरकत है कि वह ज़िंदा ख़ुदा तआला तक पहुँचाता है अन्यथा वह बनावटी ख़ुदा जो श्रीनगर (मोहल्ला खान्यार) कश्मीर में दफ़न है वह किसी की सहायता नहीं कर सकता।

अब हम बरेली से पत्र लिखने वाले सज्जन की ओर तवज्जो करके अपनी संक्षिप्त पुस्तक को लिखते हैं। अल्लाह सामर्थ्य प्रदान करने वाला है।

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, मसीह मौऊद क़ादियानी

1 मार्च 1906 ई०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं और उसके पवित्र रसूल तथा महान नबी पर दरूद भेजते हैं

अस्सलामो अलैकुम के पश्चात स्पष्ट हो कि मैंने आपका पत्र बड़े अफ़सोस के साथ पढ़ा जिसको आप ने एक ईसाई की पुस्तक "यनाबीउल इस्लाम" को पढ़ने के बाद लिखा। मुझे आश्चर्य है कि वह क़ौम जिनका ख़ुदा मुर्दा, जिनका धर्म मुर्दा और जिनकी धार्मिक पुस्तक मुर्दा और जो आध्यात्मिक नेत्र न होने के कारण स्वयं मुर्दे हैं उनकी झूठी और मिथ्या बातों से इस्लाम के बारे में आप असमंजस में पड़ गए, इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

आप को स्मरण रहे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने न केवल ख़ुदा की पुस्तकों (वे धार्मिक ग्रन्थ जो ख़ुदा की ओर से आए- अनुवादक) में परिवर्तन किए अपितु अपने धर्म की उन्नति के लिए झूठे और मिथ्या लेखों में सभी क़ौमों से आगे निकल गए। चूँकि इन लोगों के पास वह दैवीय प्रकाश नहीं जो सच्चाई के समर्थन में आकाश से उतरता और सच्चे धर्म को अपनी निरन्तर गवाहियों से संसार में एक स्पष्ट पहचान प्रदान करता है। अत: ये लोग इन बातों के लिए विवश हुए कि लोगों को एक जीवित धर्म अर्थात् इस्लाम से विमुख करने के लिए नाना प्रकार के झूठों, धोखों, मिथ्या आरोपों, जालसाज़ी और बनावटी बातों से काम लें।

हे प्रिय! इन लोगों के हृदय काले हो चुके हैं इन्हें ख़ुदा का भय नहीं, इनकी योजनाएँ दिन-रात इसी प्रयास में हैं कि लोग किसी प्रकार

अंधकार से प्रेम करें और प्रकाश को त्याग दें।

मैं नितान्त आश्चर्य में हूँ कि आप ऐसे व्यक्ति के लेखों से क्यों प्रभावित हुए। ये लोग उन जादूगरों से बढ़कर हैं जिन्होंने मूसा नबी के समक्ष रस्सियों के सांप बनाकर दिखा दिए थे परन्तु चूँकि मूसा ख़ुदा का नबी था इसलिए उसका असा (डंडा) उन सभी सांपों के निगल गया। इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा तआला का असा (डंडा) है, वह प्रतिदिन रस्सियों के सापों को निग़लता जाता है और वह दिन आने वाला है अपितु निकट है कि इन रस्सियों के सापों का नामों निशान नहीं रहेगा।

"यनाबीउल इस्लाम" के लेखक ने यदि यह प्रयास किया है कि पवित्र क़ुर्आन अमुक-अमुक कहानियों या पुस्तकों से बनाया गया है तो उसका यह प्रयास उस के हज़ारवें भाग के बराबर भी नहीं जो एक यहूदी विद्वान ने इन्जील की वास्तविकता जानने के लिए किया है। इस विद्वान ने अपने विचार में इस बात को सिद्ध कर दिया है कि इन्जील की शिष्टाचार संबंधी शिक्षा यहूदियों की पुस्तक "तालमूद" और कुछ अन्य बनी इस्राईल की पुस्तकों से ली गई है और यह चोरी इतने स्पष्ट रूप से की गई है कि लेख के लेख वैसे के वैसे ही नक़ल कर दिए गए हैं। और इस विद्वान ने दिखा दिया है कि इन्जील वास्तव में चोरी का भण्डार है। असल में इस यहूदी विद्वान ने हद कर दी और विशेषतया पहाड़ी शिक्षा को जिस पर ईसाइयों को बहुत गर्व है "तालमूद"* से अक्षरश: लेना सिद्ध कर दिया है और दिखा दिया है कि ये "तालमूद" के

* यहूदियों की धार्मिक पुस्तक का नाम - (अनुवादक)

लेख और वाक्य हैं और इसी प्रकार अन्य पुस्तकों से वे चुराए हुए लेख नक़ल करके लोगों को अचम्भे में डाल दिया है। अत: स्वयं यूरोप के अन्वेषक भी इस ओर बड़ी दिलचस्पी से ध्यान देने लगे हैं और इन दिनों में मैंने एक हिन्दू की पुस्तक देखी है जिसने यह प्रयत्न किया है कि "इन्जील" महात्मा बुद्ध की शिक्षा की चोरी है। और बुद्ध की शिष्टाचार संबंधी शिक्षा को प्रस्तुत करके इसका प्रमाण देना चाहा है। आश्चर्य की बात यह है कि बौद्धों में वही शैतान की कहानी प्रसिद्ध है जो उसको आज़माने के लिए कई स्थानों पर ले गया। अत: प्रत्येक को यह विचार हृदय में लाने का अधिकार है कि थोड़े से परिवर्तन से वही कहानी इन्जील में भी चोरी करके सम्मिलित कर दी गई है। यह बात भी सिद्ध हो चुकी है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अवश्य हिन्दुस्तान में आए थे और उनकी क़ब्र श्रीनगर (कश्मीर) में मौजूद है जिसको हमने प्रमाणों से सिद्ध कर दिया है। ऐसी स्थिति में ऐसे विरोधियों को और भी अधिकार मिल जाता है कि वे ऐसा विचार करें कि वर्तमान इन्जीलें वास्तव में बौद्ध धर्म का एक प्रारूप हैं। ये प्रमाण इतने सिद्ध हो चुके हैं कि इन्हें छुपाया नहीं जा सकता। एक और मामला आश्चर्यचकित कर देने वाला है कि "यूज़ आसफ़" की पुरानी पुस्तक (जिसके सन्दर्भ में अधिकांश अंग्रेज़ स्कालर्स के भी ये विचार हैं कि वे हज़रत ईसा के जन्म से भी पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं) जिस के अनुवाद समस्त यूरोपीय देशों में हो चुके हैं। इन्जील को उसके अधिकांश स्थानों से ऐसी समानता है कि बहुत से लेख एक दूसरे से मिलते हैं। और इन्जीलों में जो कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो अक्षरश: उस पुस्तक में

भी विद्यमान हैं। यदि एक व्यक्ति इतना मूर्ख हो कि मानो अंधा हो वह भी इस पुस्तक को देख कर विश्वास करेगा कि इन्जील इसी में से चुराई गई है। कुछ लोगों की राय यह है कि यह पुस्तक गौतम बुद्ध की है और सर्वप्रथम यह संस्कृत भाषा में थी तत्पश्चात अन्य भाषाओं में इसके अनुवाद हुए। अत: कुछ अंग्रेज़ स्कालर्स भी इस बात को स्वीकार करते हैं परन्तु इस बात को स्वीकार करने के बाद इन्जील का कुछ शेष नहीं रहता और ख़ुदा क्षमा करे, हज़रत ईसा अपनी समस्त शिक्षा में चोर सिद्ध होते हैं। पुस्तक मौजूद है जो चाहे देख ले। परन्तु हमारी राय तो यह है कि स्वयं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ही इन्जील है जो हिन्दुस्तान की यात्रा के दौरान लिखी गई और हम ने अनेकों प्रमाणों से इस बात को सिद्ध भी कर दिया है कि वास्तव में यह हज़रत ईसा की ही इन्जील है और अन्य इन्जीलों से अधिक स्वच्छ और पवित्र है परन्तु कुछ अंग्रेज़ स्कालर्स जो इस पुस्तक को "बुद्ध" की पुस्तक ठहराते हैं वे अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारते हैं और हज़रत ईसा को चोर क़रार देते हैं।

अब यह भी स्मरण रहे कि पादरियों की धार्मिक पुस्तकों का भण्डार एक ऐसा रद्दी का भण्डार है जो अत्यंत शर्मनाक है। वे लोग अपनी अटकलों से कुछ पुस्तकों को आकाशीय ठहराते हैं तो कुछ को जाली ठहराते हैं। अत: उनके निकट ये चार इन्जीलें असली हैं और शेष इन्जीलें जो लगभग छप्पन (56) हैं, जाली हैं परन्तु इसकी नींव सन्देह पर है न कि किसी ठोस प्रमाण पर। चूँकि प्रचलित इन्जीलों और अन्य इन्जीलों में बहुत अन्तर है इसलिए अपने घर में ही यह निर्णय कर लिया है और स्कालर्स की यही राय है

कि कुछ नहीं कहा जा सकता कि ये प्रचलित इन्जीलें जाली हैं या वे दूसरी जाली हैं। इसीलिए "शाह एडवर्ड क़ैसर" के राज्याभिषेक के अवसर पर लन्दन के पादरियों ने वे समस्त पुस्तकें जिन को ये लोग जाली समझते हैं उन चार इन्जीलों के साथ एक ही जिल्द बनवा कर मुबारकबादी के तौर उपहार स्वरूप पर प्रस्तुत की थीं। इस की एक प्रति हमारे पास भी है। अत: ध्यान देने योग्य बात है कि यदि वास्तव में वे पुस्तकें गन्दी, जाली और अपवित्र होतीं तो फिर पवित्र और अपवित्र दोनों को एक ही जिल्द में इकट्ठा करना कितने पाप की बात है। बल्कि मूल बात यह है कि ये लोग पूरे विश्वास के साथ न किसी पुस्तक को जाली कह सकते हैं न असली, बस अपनी अपनी राय हैं। और घोर पक्षपात के कारण उन इन्जीलों को जो क़ुर्आन करीम के अनुसार हैं उनको ये लोग जाली क़रार देते हैं। अत: बरनबास की इंजील जिसमें आख़िरी युग के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भविष्यवाणी है, वह इसी कारण जाली क़रार दी गई है कि उसमें स्पष्ट रूप से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी मौजूद है। अत: सैल साहिब ने अपनी व्याख्या में इस किस्से का भी उल्लेख किया है कि एक ईसाई राहिब* इसी इन्जील को देखकर मुसलमान हो गया था। अत: यह बात ख़ूब याद रखनी चाहिए कि ये लोग जिस पुस्तक के बारे में कहते हैं कि यह जाली है या झूठा वृतान्त है। ऐसी बातें केवल दो विचारों पर आधारित होती हैं। (1) एक यह कि वह किस्सा या वह पुस्तक प्रचलित इंजीलों के विपरीत होती है (2) दूसरे

---

* राहिब - (फ़कीर) जो धर्म के लिए सब कुछ छोड़ दे। (अनुवादक)

यह कि वह किस्सा या वह पुस्तक किसी सीमा तक पवित्र क़ुर्आन के अनुकूल होती है। और कुछ दुष्ट और मलिन हृदय वाले व्यक्ति ऐसा प्रयत्न करते हैं कि पहले तो सर्वसम्मत सिद्धान्त★ के तौर पर यह प्रकट करना चाहते हैं कि ये जाली किताबें हैं और फिर कहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन में उनका वर्णन मौजूद है। इस प्रकार नादान लोगों को धोखे में डालते हैं। वास्तविकता यह है कि उस युग की पुस्तकों का जाली या असली सिद्ध करना ख़ुदा की वह्यी※ के अलावा किसी का काम न था। अत: ख़ुदा की वह्यी में जिस किसी उल्लेख की निरन्तरता हुई वह सच्चा है चाहे कुछ मूर्ख लोग उसको झूठा क़रार देते हों और जिस घटना को ख़ुदा की वह्यी ने झुठला दिया वह झूठी है भले ही कुछ लोग उसको सच्चा मानते हों। और पवित्र क़ुर्आन के बारे में यह धारणा रखना कि इन प्रसिद्ध कहानियों, अफ़सानों, पत्थर पर लिखे लेखों या इन्जीलों से बनाया गया है नितान्त लज्जनीय मूर्खता है। क्या यह संभव नहीं कि ख़ुदा की किताब में किसी प्राचीन उल्लेख को दोहरा दिया जाए। अत: हिन्दुओं के वेद जो उस ज़माने में विलुप्त थे उनकी कई सच्चाइयाँ क़ुर्आन शरीफ़ में मौजूद हैं तो क्या हम कह सकते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वेद भी पढ़ा था। इन्जीलों इत्यादि का भण्डार जो प्रेस के द्वारा अब प्राप्त हुआ है अरब में उनको कोई जानता भी नहीं था और अरब के लोग बिल्कुल अनपढ़ थे। उस देश में यदि कहीं कोई ईसाई भी

★ ईसाई धर्म में धर्म के समर्थन के लिए हर प्रकार का झूठ और धोखा न्यायसंगत अपितु पुण्य का काम है। देखिए पौलूस का कथन।

※ **वह्यी** – ख़ुदा की ओर से अवतरित वाणी - (अनुवादक)

था तो वह भी अपने धर्म का विस्तृत ज्ञान नहीं रखता था★तो फिर यह आरोप कि मानो आंहज़रत मुहम्मद साहिब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चोरी करके उन किताबों से वे लेख लिए थे एक लानती विचार है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनपढ़ मात्र थे। आप अरबी भाषा भी नहीं पढ़ सकते थे फिर यूनानी या इबरानी भाषा की तो बात ही छोड़िए। इसका प्रमाण देना हमारे विरोधियों के ज़िम्मे है कि उस युग की कोई पुरानी किताब प्रस्तुत करें जिन से ये लेख लिए गए। यदि थोड़ी देर के लिए यह बात मान भी लें कि पवित्र क़ुर्आन में कोई लेख या वर्णन चोरी से लिया गया होता तो अरब के ईसाई लोग जो इस्लाम के कट्टर विरोधी और शत्रु थे, तुरन्त हंगामा खड़ा कर देते कि हम से सुन कर ऐसा लेख लिखा है। याद रहे कि संसार में केवल पवित्र क़ुर्आन☆ ही एकमात्र ऐसी

★पादरी फण्डल साहिब ने अपनी पुस्तक "मीज़ानुल हक़" में इस बात को स्वीकार कर लिया है कि अरब के ईसाई भी वहशियों की तरह थे और अनभिज्ञ थे। इसी से

☆ पवित्र क़ुर्आन ने तो अपने बारे में चमत्कारिक और अद्वितीय होने का दावा करके अपनी सफ़ाई इस प्रकार प्रमाणित कर दी कि ऊंचे स्वर से कह दिया यदि कोई इसे मानवीय कलाम (वाणी) समझता है तो वह उत्तर दे, परन्तु समस्त विरोधी चुप रहे परन्तु इंजील को तो उसी युग में यहूदियों ने चोरी का ठहरा दिया था फिर इन्जील ने स्वयं भी ऐसा दावा नहीं किया कि मनुष्य ऐसी इंजील बनाने की शक्ति नहीं रखता। अत: चोरी की होने की शंका इंजील पर चरितार्थ हो सकती है न कि पवित्र क़ुर्आन पर क्योंकि पवित्र क़ुर्आन का दावा है कि मनुष्य ऐसा क़ुर्आन बनाने पर समर्थ नहीं और समस्त विरोधियों ने चुप रह कर इस दावे की सच्चाई को सिद्ध कर दिया। इसी से।

किताब है जिसकी ओर से चमत्कारिक होने का दावा प्रस्तुत किया गया और बड़े ज़ोर से यह दावा किया गया कि इस की ख़बरें और उसके किस्से सब परोक्ष (ग़ैब) के बारे में है और आइन्दा प्रलय तक की ख़बरों का इसमें उल्लेख है और वह अपनी मृदुल और यथोचित भाषा होने की दृष्टि से भी चमत्कार है। अत: ईसाइयों के लिए उस समय यह बात बहुत ही साधारण थी कि वे कुछ क़िस्से निकालकर प्रस्तुत करते कि इन पुस्तकों से पवित्र क़ुर्आन ने चोरी की है। ऐसी स्थिति में इस्लाम का समस्त कारोबार ठंडा पड़ जाता परन्तु अब तो मरने के बाद शोर मचाने वाली बात है। बुद्धि किसी भी तरह यह स्वीकार नहीं कर सकती कि यदि अरब के ईसाइयों के पास वास्तव में ऐसी किताबें मौजूद थीं जिन के बारे में अनुमान किया जा सकता था कि इन किताबों से पवित्र क़ुर्आन ने क़िस्से लिए हैं भले ही वे किताबें असली थीं या नकली थीं तो क्या ईसाई इस पर ख़ामोश रहते। अत: नि:सन्देह पवित्र क़ुर्आन का समस्त विषय ख़ुदा की वह्यी (आकाशवाणी) से है और वह वह्यी ऐसा महान चमत्कार था कि उसका उदाहरण कोई व्यक्ति प्रस्तुत न कर सका। विचार करने की बात है कि जो व्यक्ति दूसरी किताबों का चोर हो और स्वयं लेख लिखे और जानता हो कि अमुक किताब से मैंने यह लेख लिया है और ग़ैब (परोक्ष) की बातें नहीं हैं उसको कब हिम्मत और साहस हो सकता है कि समस्त संसार को मुकाबले के लिए बुलाए और फिर कोई भी मुक़ाबला न करे और कोई भी उस के भेद खोलने पर समर्थ न हो। वास्तविकता यह है कि ईसाई पवित्र क़ुर्आन पर बहुत ही नाराज़ हैं और इसका कारण यही है कि पवित्र

क़ुर्आन ने ईसाई धर्म के समस्त बाल और पंख तोड़ दिए हैं। एक मनुष्य का ख़ुदा बनना झूठा प्रमाणित कर दिया, सलीब की आस्था और विश्वास को चकनाचूर कर दिया और इंजील की वह शिक्षा जिस पर ईसाइयों को गर्व था, उसका अत्यंत निर्रथक और बेकार होना सप्रमाण सिद्ध कर दिया तो फिर ईसाइयों का अपने अहंकार के कारण आवेग में आना अवश्यम्भावी था। अत: वे जो कुछ भी झूठ और मक्कारी से काम लें थोड़ा है। जो व्यक्ति मुसलमान होकर फिर ईसाई बनना चाहे उसका उदाहरण ऐसा ही है जैसे कोई माँ के पेट से पैदा होकर व्यस्क होकर फिर यह चाहे कि माँ के पेट में प्रवेश कर जाए और वही नुत्फ़ा (बीज) बन जाए जो पहले था। मुझे आश्चर्य है कि ईसाइयों को किस बात पर गर्व है। यदि उनका ख़ुदा है तो वह वही है जो एक अवधि हुई कि मर गया और श्रीनगर मुहल्ला ख़ानयार कश्मीर में उसकी क़ब्र है। यदि उसके चमत्कार हैं तो वे दूसरे नबियों से बढ़कर नहीं हैं अपितु इल्यास नबी के चमत्कार उस से बहुत अधिक हैं और यहूदियों के कथनानुसार उस से कोई चमत्कार प्रकट नहीं हुआ केवल धोखा और छल★ था और भविष्यवाणियों का हाल यह है कि अधिकांश झूठी निकली हैं। क्या बारह हवारियों (ईसा मसीह के विशेष सहायक) को वादे के अनुसार स्वर्ग में बारह

★ यहूदियों के इस कथन का स्वयं हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के कथन में समर्थन पाया जाता है क्योंकि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम इंजील में वर्णन करते हैं कि इस युग के हरामकार मुझ से निशान मांगते हैं उनको कोई निशान नहीं दिखाया जाएगा। अत: स्पष्ट है कि यदि हज़रत ईसा ने कोई चमत्कार यहूदियों को दिखाया होता तो अवश्य वह यहूदियों की इस याचना के समय उन चमत्कारों का हवाला देते। इसी से।

तख़्त प्राप्त हो गए? कोई पादरी साहिब तो उत्तर दें कि क्या हज़रत ईसा को उन की अपनी भविष्यवाणी के अनुसार दुनिया की बादशाहत प्राप्त हो गई? जिसके लिए हथियार भी ख़रीदे गए थे, कोई तो उत्तर दे और क्या उसी युग में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अपने दावे के अनुसार आसमान से उतर आए? मैं कहता हूँ कि उतरना तो छोड़ो उनको आसमान पर जाना ही नसीब नहीं हुआ। यही मत युरोप के स्कालर्स विद्वानों का भी है अपितु वह सलीब से मूर्छित होकर बच गए और फिर छुपते-छुपाते भाग कर हिन्दुस्तान के मार्ग से कश्मीर में पहुँचे और वही उनका निधन हुआ।★

फिर शिक्षा का हाल यह है कि इस से हटकर कि उस पर

★ जो लोग मुसलमान कहला कर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इस भौतिक शरीर के साथ आसमान पर पहुँचाते हैं वे पवित्र क़ुर्आन के विरुद्ध एक व्यर्थ बात मुँह पर लाते हैं। पवित्र क़ुर्आन तो आयत 'फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी' (अल माइदह-118) में हज़रत ईसा की मौत प्रकट करता है और आयत "क़ुल सुब्हाना रब्बी हल कुन्तो इल्ला बशरन रसूला" (बनी इस्राईल- 94) में मनुष्य का इस भौतिक शरीर के साथ आसमान पर जाना वर्जित करार देता है। फिर यह कैसी मूर्खता है कि ख़ुदा के कलाम के विरुद्ध आस्था रखते हैं। "तवफ़्फ़ा" के यह अर्थ निकालना कि इस भौतिक शरीर के साथ आसमान पर उठाया जाना, इससे बढ़कर कोई मूर्खता नहीं होगी। सर्वप्रथम तो किसी शब्दकोश में तवफ़्फ़ा के यह अर्थ नहीं लिखे कि 'शरीर के साथ आसमान पर उठाया जाना' फिर इसके अतिरिक्त आयत "फलम्मा तवफ़्फयतनी" प्रलय के बारे में है। अर्थात प्रलय के दिन हज़रत ईसा ख़ुदा तआला को यह उत्तर देंगे। तो इस से यह सिद्ध होता कि महाप्रलय तो आ जाएगा परन्तु हज़रत ईसा नहीं मरेंगे और मरने से पूर्व ही इस भौतिक शरीर के साथ ख़ुदा के समक्ष प्रस्तुत हो जाएँगे। पवित्र क़ुर्आन में यह उलट-फेर करना यहूदियों से बढ़कर क़दम है। इसी से।

चोरी का आरोप लगाया गया है। मानव शक्तियों की समस्त शाखाओं में से मात्र एक शाखा शील और क्षमा पर इंजील की शिक्षा बल देती है और शेष शाखाओं का ख़ून कर दिया है। हालाँकि प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है कि उसको जो शक्ति सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने दी है उसमें से कोई भी चीज़ उसमें से बेकार नहीं है। हर एक शक्ति उसमें यथास्थान आवश्यकतानुसार पैदा की गई है। जैसे किसी समय और किसी अवसर पर शील और क्षमा अच्छे शिष्टाचार में से समझे जाते हैं ऐसा ही किसी समय स्वाभिमान, बदला लेना और अपराधी को दण्ड देना उत्तम शिष्टाचार में गिना जाता है। न सदा क्षमा करना नीति के अनुकूल है और न सदैव बदला लेना ही भलाई में गिना जा सकता है। यही क़ुर्आनी शिक्षा है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है-

جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ

(अश्शूरा-42/41)

अर्थात बुराई का बदला उतना ही है जितनी बुराई की गई परन्तु जो कोई क्षमा करे और उस क्षमा में कोई सुधार निहित हो★ तो इसका प्रतिफल ख़ुदा के पास है। यह तो क़ुर्आन शरीफ़ की शिक्षा है परन्तु इन्जील में बिना किसी शर्त के प्रत्येक अवसर पर शील और क्षमा की प्रेरणा दी गई है और दूसरे मानव हितों को जिन पर समस्त संस्कृतियों और सभ्यताओं का सिलसिला चल रहा है, ध्वस्त कर दिया है और मानवीय शक्तियों के पेड़ की समस्त शाखाओं में से केवल एक शाखा

★ पवित्र क़ुर्आन ने अनुचित क्षमा और शील को वैध नहीं रखा क्योंकि इससे मानव शिष्टाचार बिगड़ते हैं और अनुशासन छिन्न-भिन्न हो जाता है अपितु उस क्षमा की अनुमति दी है जिस से कोई सुधार हो सके। इसी से।

के बढ़ने पर बल दिया है और शेष शाखाओं की देख-रेख बिल्कुल छोड़ दी गई है। फिर आश्चर्य है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम स्वयं शिष्टाचार की शिक्षा का पालन नहीं किया। अंजीर के पेड़ को बिना फल देखकर उस पर बद्दुआ की और दूसरों को दुआ करना सिखाया और दूसरों को यह भी आदेश दिया कि तुम किसी को मूर्ख मत कहो परन्तु स्वयं इस सीमा तक गाली गलौज में बढ़ गए कि यहूदी बुज़ुर्गों को हराम की औलाद तक कह दिया। और अपने प्रत्येक प्रवचन में यहूदी विद्वानों को कठोर से कठोर गालियाँ दीं और उनके बुरे-बुरे नाम रखे। शिष्टाचार के शिक्षक का कर्तव्य यह है कि पहले स्वयं अच्छे शिष्टाचार प्रदर्शित करे। अत: क्या ऐसी अधूरी शिक्षा जिस पर वह स्वयं भी कार्यरत नहीं रहे, ख़ुदा तआला की ओर से हो सकती है? पवित्र और पूर्ण शिक्षा पवित्र क़ुर्आन की है जो मानव रूपी वृक्ष की प्रत्येक शाखा का पालन-पोषण करती है और पवित्र क़ुर्आन केवल एक पहलू पर बल नहीं देता अपितु कभी क्षमा और शील की शिक्षा देता है परन्तु इस शर्त पर कि क्षमा करने में सुधार निहित हो और कभी समय और अवसर के अनुकूल अपराधी को दण्ड देने का आदेश देता है। अत: पवित्र क़ुर्आन वास्तव में ख़ुदा तआला के उस प्रकृति के नियम का चित्र है जो हमेशा हमारी आँखों के सामने है। यह बात अत्यंत बुद्धिसंगत है कि ख़ुदा तआला का कथन और कर्म दोनों अनुकूल होने चाहिएँ अर्थात जिस रंग और ढंग पर संसार में ख़ुदा तआला का कार्य दिखाई देता है आवश्यक है कि ख़ुदा तआला की सच्ची किताब उसी के अनुसार शिक्षा दे, न यह कि कर्म से कुछ और दिखाई दे और कथन से कुछ और। ख़ुदा तआला के कर्म में

हम देखते हैं कि हमेशा नर्मी और क्षमा नहीं अपितु वह अपराधियों को तरह-तरह की यातनाओं से दण्डित भी करता है। ऐसी यातनाओं का वर्णन पहली किताबों में भी मिलता है। हमारा ख़ुदा केवल नर्मी करने वाला ख़ुदा नहीं अपितु वह नीतिवान भी है और उसका प्रकोप भी बड़ा कठोर है। सच्ची किताब वह किताब है जो उसकी प्रकृति के नियम के अनुकूल है और उसका सच्चा कथन वह है जो उसके कर्म का विरोधी नहीं। हमने कभी नहीं देखा कि ख़ुदा ने अपनी सृष्टि के साथ हमेशा नर्मी और क्षमा का बर्ताव किया हो और कोई प्रकोप न आया हो। अब भी अपवित्र स्वभाव रखने वाले लोगों के लिए ख़ुदा तआला ने मेरे द्वारा एक बहुत भयंकर और भीषण भूकम्प की सूचना दे रखी है जो उनका विनाश करेगी। प्लेग भी अभी दूर नहीं हुई। इस से पहले नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम का क्या हाल हुआ? लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम का क्या हाल हुआ? अत: निश्चय समझो की शरीअत का उद्देश्य "तख़ल्लुक बिअख़लाक़िल्लाह" है अर्थात ख़ुदा के अख़लाक (सदाचारों) अपने अन्दर पैदा करना, यही आत्मा की विशेषता है। यदि हम यह चाहें कि ख़ुदा से भी बढ़ कर कोई अच्छी विशेषता हम में पैदा हो तो यह बेईमानी और गन्दे रंग की धृष्टता है और ख़ुदा के अख़लाक़ (सदाचारों) पर एक आरोप है।

फिर एक और बात पर भी विचार करो कि ख़ुदा का प्रारंभ से यह कानून-ए-क़ुदरत है कि वह तौबा (ख़ुदा से क्षमा याचना) से पाप क्षमा करता है और भले लोगों की सिफ़ारिश के तौर पर दुआ भी स्वीकार करता है परन्तु यह हमने ख़ुदा के कानून-ए-क़ुदरत में कभी नहीं देखा कि ज़ैद अपने सिर पर पत्थर मारे और उस से बकर

का सिर दर्द ठीक हो जाए। फिर हमें मालूम नहीं होता कि मसीह की आत्महत्या से अन्य लोगों के अन्दर की बीमारी का दूर होना किस क़ानून पर आधारित है। वह कौन सा दर्शन है जिस से हम मालूम कर सकें कि मसीह का मरना किसी दूसरे के अन्त:करण की अपवित्रता को दूर कर सकता है अपितु अनुभव इसके विरुद्ध गवाही देता है। क्योंकि जब तक मसीह ने आत्महत्या का इरादा नहीं किया था तब तक ईसाइयों में सदाचार और ख़ुदा की उपासना का मूल तत्व था परन्तु सलीब के बाद तो जैसे एक बांध टूट कर चारों ओर नदी का पानी फैल जाता है ऐसा ही ईसाइयों के आंतरिक आवेगों का हाल हुआ। नि:सन्देह यदि यह आत्महत्या की घटना मसीह के अपने इरादे और इच्छा से हुई थी तो यह बहुत अनुचित कार्य किया, यदि वही जीवन उपदेश और प्रवचनों में व्यतीत करता तो ख़ुदा की सृष्टि को लाभ पहुँचता। इस अनुचित कार्य से दूसरों को क्या लाभ हुआ। हाँ यदि मसीह आत्महत्या के बाद जीवित होकर यहूदियों के समक्ष आसमान पर चढ़ जाता तो इससे यहूदी उसे स्वीकार कर लेते परन्तु अब तो यहूदियों और समस्त लोगों की दृष्टि में मसीह का आसमान पर चढ़ना केवल एक अफ़साना (झूठी कहानी) और मिथ्या है।

फिर तस्लीस की आस्था (तीन ख़ुदाओं को मानने की धारणा) भी एक अनोखी आस्था है। क्या किसी ने सुना है कि स्थायी तथा पूर्ण तौर पर तीन भी हों और एक भी हो। और एक भी पूर्ण ख़ुदा हो और तीन भी पूर्ण ख़ुदा हों। ईसाई धर्म भी बड़ा विचित्र धर्म है कि हर बात में ग़लती और हर मामले में लड़खड़ाहट है। फिर बावजूद इन समस्त अंधेरों के भावी युग के लिए वह्यी और इल्हाम पर मुहर

लग गई है और अब उन समस्त इंजीलों के दोषों का निर्णय ईसाइयों की आस्थानुसार उन की वह्यी की दृष्टि से तो असंभव है क्योंकि उन की आस्थानुसार अब वह्यी आगे नहीं अपितु पीछे रह गई है। अब समस्त आधार केवल अपनी-अपनी राय पर है, जो मूर्खता और अंधकार से पवित्र नहीं और उन की इन्जीलें इतनी अनर्थक बातों का भण्डार हैं कि उनकी गणना करना असंभव है। उदाहरण के तौर पर एक निर्बल व्यक्ति को ख़ुदा बनाना और दूसरों के पापों के दण्ड में उसके लिए सलीब का चयन करना और तीन दिन तक उसको नर्क में भेजना, फिर एक ओर ख़ुदा बनाना दूसरी ओर निर्बलता और झूठ की आदत को उसकी ओर फेरना।

अत: इन्जीलों में बहुत से ऐसे वाक्य पाए जाते हैं जिन से 'नाऊज़ुबिल्लाह' हज़रत मसीह का झूठा होना सिद्ध होता है। उदाहरणार्थ वह एक चोर को आश्वासन देते हैं कि आज तू स्वर्ग में मेरे साथ रोज़ा खोलेगा और एक ओर वह वादा के विरुद्ध उसी दिन नर्क में जाते हैं और तीन दिन नर्क में ही रहते हैं। ऐसा ही इन्जीलों में यह भी लिखा है कि शैतान आज़माने के लिए मसीह को कई स्थानों पर लिए फिरा। यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है कि मसीह ख़ुदा बन कर भी शैतान की परीक्षा से न बच सका और शैतान को ख़ुदा की परीक्षा का साहस हो गया। यह इंजील का दर्शन समस्त संसार से अनोखा है। यदि शैतान वास्तव में मसीह के पास आया था तो मसीह के लिए बड़ा अच्छा अवसर था कि यहूदियों को शैतान दिखा देता क्योंकि यहूदी हज़रत मसीह की नुबुव्वत को बिल्कुल भी नहीं मानते थे। कारण यह है कि मलाकी नबी की किताब में सच्चे मसीह की

यह निशानी लिखी थी कि उस से पहले★इल्यास नबी दोबारा संसार में आएगा परन्तु चूंकि इल्यास नबी दोबारा संसार में नहीं आया। इसलिए यहूदी अब तक हज़रत ईसा को झूठा धोखेबाज़ कहते हैं। यह यहूदियों का एक ऐसा तर्क है कि ईसाइयों के पास इसका कोई उत्तर नहीं। और शैतान का मसीह के पास आना यह भी यहूदियों के निकट पागलपन से भरा विचार है। अधिकांश पागल ऐसे स्वप्न देखा करते हैं। यह बीमारी काबूस※नाम का रोग है। इस स्थान पर एक अन्वेषक अंग्रेज़ ने इसका यह अर्थ निकाला है कि शैतान के आने का तात्पर्य यह है कि मसीह को तीन बार शैतानी इल्हाम हुआ था परन्तु मसीह उस शैतानी इल्हाम से प्रभावित नहीं हुआ। उन शैतानी इल्हाम में से एक यह था कि मसीह के हृदय में शैतान की ओर से यह विचार डाला गया था कि वह ख़ुदा को छोड़ दे और शैतान के अधीन हो जाए। परन्तु आश्चर्य है कि शैतान ख़ुदा के बेटे पर हावी हुआ और उसे संसार

★ उस युग में यहूदी लोग इल्यास नबी के दोबारा संसार में आने और आसमान से उतरने की उसी प्रकार प्रतीक्षा कर रहे थे जैसे कि आजकल हमारे सीधे-सीधे मौलवी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान से उतरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मलाकी नबी की इस भविष्यवाणी की तावील करनी पड़ी। इसी कारण यहूदी अब तक मसीह को सच्चा नबी नहीं मानते क्योंकि इल्यास अभी तक आसमान से नहीं उतरा। इस आस्था के कारण यहूदी तो नर्क में गए अब इसी झूठी आशा में मुसलमान उलझे हुए हैं जो सर्वथा यहूदियों का रंग है। जो भी हो इस से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी पूरी हो गई। इसी से।

※ **काबूस-** एक ऐसा रोग जिस में व्यक्ति को नींद में ऐसा लगता है कि जैसे किसी ने उसे दबा लिया है वह भय से चीखने लगता है- (अनुवादक)

की ओर मोड़ दिया, हालाँकि वह ख़ुदा का बेटा कहलाता है, फिर ख़ुदा होने के बावजूद वह मरता है। क्या ख़ुदा भी मरा करता है? और यदि केवल मनुष्य मरा है तो फिर यह दावा क्यों है कि अल्लाह के बेटे ने इंसानों के लिए जान दी? और फिर वह ख़ुदा का बेटा कहलाकर भी प्रलय के समय से अनभिज्ञ है जैसा कि इंजील में मसीह की स्वीकृति मौजूद है कि वह ख़ुदा का बेटा होने के बावजूद यह नहीं जानता कि प्रलय कब आएगा। ख़ुदा कहलाने के बावजूद क़यामत के ज्ञान से अपरिचित होना कितनी व्यर्थ बात है। अपितु प्रलय तो दूर की बात है उसे तो यह भी मालूम नहीं था कि जिस अंजीर के पेड़ की ओर चला उस पर कोई फल नहीं।

अब हम असल बात की ओर आते हुए संक्षेप में वर्णन करते हैं कि ख़ुदा तआला की एक वह्यी यदि किसी पिछले क़िस्से या किताब के अनुकूल आ जाए या पूर्ण रूप से अनुकूल न होकर आंशिक रूप से अनुकूल हो या कल्पना करो कि वह क़िस्सा या वह किताब लोगों की दृष्टि में एक बनावटी किताब या क़िस्सा है तो उस से ख़ुदा तआला की वह्यी पर कोई प्रहार नहीं हो सकता। जिन किताबों का नाम ईसाई लोग ऐतिहासिक किताबें रखते या आसमानी वह्यी कहते हैं। ये समस्त निराधार बातें हैं जिन का कोई प्रमाण नहीं। और उनकी कोई किताब संदेह की गन्दगी से ख़ाली नहीं और जिन किताबों को वे जाली और बनावटी कहते हैं संभव है वे जाली न हों और जिन किताबों को वे सही मानते हैं संभव है वे जाली हों। ख़ुदा तआला की किताब उनकी अनुकूलता या प्रतिकूलता की मोहताज नहीं है। ख़ुदा तआला की सच्ची किताब की यह कसौटी नहीं है कि ऐसी किताबों की अनुकूलता या

प्रतिकूलता देखी जाए। ईसाइयों का किसी किताब को जाली कहना ऐसा मामला नहीं है कि जो किसी न्यायालय की छान-बीन से सिद्ध हो चुका है और न उनका किसी किताब को सही कहना किसी प्रमाणिक सिद्धान्त पर आधारित है। सरासर अटकलें और कल्पनाएँ हैं। अत: उनके ये निरर्थक विचार ख़ुदा की किताब की कसौटी नहीं हो सकते अपितु कसौटी यह है कि देखना चाहिए कि वह किताब ख़ुदा के प्रकृति के नियम★ और ठोस चमत्कारों से अपना ख़ुदा की ओर से होना प्रमाणित करती है या नहीं? हमारे सरदार और पेशवा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से तीन हज़ार से अधिक चमत्कार ज़ाहिर हुए हैं और भविष्यवाणियों की तो कोई गिनती ही नहीं, परन्तु हमें आवश्यकता नहीं कि उन पूर्व चमत्कारों को प्रस्तुत करें अपितु एक महानतम चमत्कार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह है कि समस्त नबियों की वह्यी समाप्त हो गई और चमत्कार जाते रहे और उनकी उम्मतें ख़ाली हाथ हैं केवल क़िस्से-कहानियाँ उनके हाथ में रह गईं परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह्यी समाप्त नहीं हुई और न चमत्कारों का अंत हुआ बल्कि हमेशा उम्मत के

★ संसार में एक क़ुर्आन ही है जिसने ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं को ख़ुदा के उस प्रकृति के नियम के अनुकूल प्रकट किया है जो ख़ुदा तआला के कर्म से संसार में पाया जाता है और जो मानव स्वभाव उसकी अन्तरात्मा में विद्यमान है। ईसाई साहिबों का ख़ुदा केवल इंजील के पन्नों में क़ैद है और जिस तक इंजील नहीं पहुँची वह उस ख़ुदा से अपरिचित है परन्तु जिस ख़ुदा को क़ुर्आन प्रस्तुत करता है उससे कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति बेख़बर नहीं। अत: सच्चा ख़ुदा वही ख़ुदा है जिसे क़ुर्आन ने प्रस्तुत किया है, जिसकी गवाही मानव-स्वभाव और प्रकृति का नियम दे रहा है। इसी से।

अनुयायियों में से कुछ बुज़ुर्ग हस्तियाँ जो आपके अनुसरण से प्रकाशमान हैं, के द्वारा प्रकट होते हैं। इसी कारण इस्लाम धर्म एक जीवित धर्म है और उस का ख़ुदा एक जीवित ख़ुदा है। अत: इस युग में भी इस गवाही को प्रस्तुत करने के लिए यही ख़ुदा का बन्दा मौजूद है। अब तक मेरे द्वारा हज़ारों निशानियाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई और अल्लाह की किताब के बारे में प्रकट हो चुकी हैं और ख़ुदा तआला की पवित्र वाणी से मैं प्रतिदिन सम्मानित किया जाता हूँ। अब सावधान हो जाओ और विचार करके देख लो कि जिस स्थिति में संसार में हज़ारों धर्म ख़ुदा तआला की ओर से आने वाले बताए जाते हैं तो क्योंकर सिद्ध हो कि वे वास्तव में ख़ुदा की ओर से हैं। अत: सच्चे धर्म को परखने के लिए कोई कसौटी तो चाहिए। केवल यथोचित होने का दावा, किसी धर्म के ख़ुदा की ओर से होने का तर्क नहीं हो सकता क्योंकि यथोचित बातें मनुष्य भी वर्णन कर सकता है और जो ख़ुदा केवल मानव तर्कों से पैदा होता है वह ख़ुदा नहीं है अपितु ख़ुदा वह है जो स्वयं को ठोस निशानों के साथ ख़ुद प्रकट करता है। वह धर्म जो केवल ख़ुदा की ओर से है उसके प्रमाण के लिए यह अनिवार्य है कि वह ख़ुदा की ओर से होने के निशान और ख़ुदाई मुहर अपने साथ रखता हो ताकि ज्ञात हो कि वह ख़ुदा तआला की ओर से है। अत: यह धर्म इस्लाम है। वह ख़ुदा जो छुपा हुआ और अत्याधिक गुप्त है इसी धर्म के द्वारा उसका ज्ञान होता है और इसी धर्म के सच्चे अनुयायियों पर वह प्रकट होता है जो वास्तव में सच्चा धर्म है। सच्चे धर्म पर ख़ुदा का हाथ होता है और ख़ुदा उसके द्वारा ज़ाहिर करता है कि मैं विद्यमान हूँ। जिन धर्मों की नीवं मात्र क़िस्से कहानियों पर है वह मूर्ति पूजा से

कम नहीं, उन धर्मों में सच्चाई की कोई रूह नहीं है। यदि ख़ुदा अब भी जीवित है जैसा कि पहले था और यदि वह अब भी बोलता और सुनता है जैसा कि पहले था तो कोई कारण मालूम नहीं होता कि वह इस युग में ऐसा चुप हो जाए कि मानो मौजूद नहीं। यदि वह इस युग में बोलता नहीं तो निश्चय वह अब सुनता भी नहीं मानो अब वह कुछ भी नहीं। सच्चा धर्म वही है जो इस युग में भी ख़ुदा का सुनना और बोलना दोनों सिद्ध करता है। अत: सच्चे धर्म में ख़ुदा तआला अपनी वाणी से अपने विद्यमान होने की स्वयं सूचना देता है। ख़ुदा को पहचानना एक अत्याधिक कठिन कार्य है। संसार के विद्वानों और दार्शनिकों का कार्य नहीं है कि ख़ुदा का पता लगाएँ क्योंकि धरती और आकाश को देखकर केवल यह सिद्ध होता है कि इस सुदृढ़ और मज़बूत व्यवस्था का कोई व्यवस्थापक होना चाहिए परन्तु यह सिद्ध नहीं होता कि वास्तव में वह व्यवस्थापक मौजूद भी है। और "**होना चाहिए**" तथा "**है**" में जो अन्तर है वह स्पष्ट है। अत: इस अस्तित्व का निश्चित तौर पर पता देने वाला केवल पवित्र क़ुर्आन है जो न केवल ख़ुदा को पहचानने का आदेश देता है अपितु स्वयं दिखा देता है। आकाश के नीचे कोई भी किताब ऐसी नहीं है जो इस गुप्त अस्तित्व का पता दे।

धर्म का उद्देश्य क्या है!!! बस यही कि ख़ुदा तआला की हस्ती और उसकी सम्पूर्ण विशेषताओं पर निश्चित तौर पर ईमान (विश्वास) प्राप्त करके मनुष्य शारीरिक आवेगों से मुक्ति पा जाए, ख़ुदा तआला से व्यक्तिगत प्रेम पैदा हो क्योंकि वास्तव में वही स्वर्ग है जो परलोक में तरह-तरह के रंगो में प्रकट होगा। वास्तविक ख़ुदा से अनभिज्ञता और उस से दूर रहना, उस से सच्चा प्रेम न रखना वास्तव में यही नर्क है

जो परलोक में नाना प्रकार के रंगों में प्रकट होगा। इस मार्ग में मूल उद्देश्य यह है कि उस ख़ुदा के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास प्राप्त हो फिर पूर्ण प्रेम भी हो। अब देखना चाहिए कि कौन सा धर्म और कौन सी किताब है जिसके द्वारा यह उद्देश्य प्राप्त हो सकता है। इंजील तो स्पष्ट कहती है कि ख़ुदा से बातें करने का द्वार बन्द है और विश्वास के मार्ग अवरुद्ध हैं, जो कुछ हुआ वह पहले हो चुका आगे कुछ नहीं। परन्तु आश्चर्य है कि वह ख़ुदा जो अब तक इस युग में भी सुनता है वह इस युग में बोलने से क्यों निर्बल हो गया है? क्या हमें इस आस्था से शान्ति प्राप्त हो सकती है कि पूर्व के किसी युग में वह बोलता भी था और सुनता भी था परन्तु अब वह केवल सुनता है, बोलता नहीं। ऐसा ख़ुदा किस काम का जो एक मनुष्य की भान्ति वृद्ध होकर उसके कुछ अंग बेकार हो जाते हैं, पर्याप्त समय गुज़र जाने के कारण उसके भी कुछ अंग बेकार हो गए, और ऐसा ख़ुदा किस काम का कि जब तक उसे टकटकी* से बांधकर उसको कोड़े न लगें और उसके मुहँ पर न थूका जाए और कुछ दिन उसको जेल में न रखा जाए और अन्ततः उसको सलीब पर लटका दिया जाए तब तक वह अपने बन्दों के पाप क्षमा नहीं कर सकता। हम तो ऐसे ख़ुदा से बहुत दूर हैं जिस पर एक अपमानित क़ौम यहूदियों की जो अपनी सरकार भी खो बैठी थी विजयी हो गई। हम उस ख़ुदा को सच्चा ख़ुदा जानते हैं जिस ने मक्का के एक निर्धन और असहाय को अपना नबी बनाकर अपनी क़ुदरत और विजय का जल्वा उसी युग में समस्त संसार को दिखा दिया। यहाँ तक

---

* **टकटकी**- लकड़ी या लोहे का एक ढांचा जिसके साथ अपराधियों के हाथ पैर बांध कर कोड़े लगाए जाते हैं - (अनुवादक)

कि जब ईरान के बादशाह ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गिरफ़्तारी के लिए अपने सिपाही भेजे तो उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश दिया कि सिपाहियों को कह दे कि आज रात मेरे ख़ुदा ने तुम्हारे ख़ुदा को क़त्ल कर दिया है। अब देखना चाहिए कि एक ओर एक मनुष्य ख़ुदाई का दावा करता है और अन्त में परिणाम यह होता है कि रोम की सरकार का एक सिपाही उसे गिरफ्तार करके एक दो घण्टे में जेल में डाल देता है और रात भर की गई दुआएं भी स्वीकार नहीं होतीं। दूसरी ओर वह मर्द है जो केवल नबी होने का दावा करता है और ख़ुदा उसके मुक़ाबले पर बादशाहों को तबाह करता है। यह उक्ति सत्याभिलाषी के लिए बहुत लाभप्रद है कि- "यार ग़ालिब शौ कि ता ग़ालिब शवी"★ । हम ऐसे धर्म का क्या करें जो मुर्दा धर्म है, हम ऐसी किताब से क्या लाभ उठा सकते हैं जो मुर्दा किताब है, हमें ऐसा ख़ुदा क्या लाभ पहुँचा सकता है जो मुर्दा ख़ुदा है। मुझे उस हस्ती की सौगन्ध है कि जिस के हाथ में मेरी जान है कि मैं अपने पवित्र ख़ुदा के निश्चित और यक़ीनी संवाद से सम्मानित और लगभग प्रतिदिन सम्मानित होता हूँ। वह ख़ुदा जिसे यसू मसीह कहता है कि तूने मुझे क्यों छोड़ दिया, मैं देखता हूँ कि उसने मुझे नहीं छोड़ा और मसीह की तरह मुझ पर भी बहुत आक्रमण हुए परन्तु हर आक्रमण में शत्रु असफल रहे। मुझे फांसी देने के लिए योजना बनाई गई परन्तु मैं मसीह की तरह सलीब पर नहीं चढ़ा अपितु प्रत्येक संकट के समय मेरे ख़ुदा ने मेरी रक्षा की, मेरे लिए उसने बड़े-बड़े चमत्कार दिखाए, बड़े-बड़े शक्तिशाली हाथ दिखाए, हज़ारों

★ अर्थात विजयी का मित्र बन जा ताकि तू भी विजयी बन जाए - (अनुवादक)

निशानों से उसने मुझ पर सिद्ध कर दिया कि ख़ुदा वही ख़ुदा है जिसने क़ुर्आन को उतारा, जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा। मैं ईसा मसीह को इन मामलों में हरगिज़ अपने से बढ़कर कुछ नहीं देखता अर्थात जैसे उस पर ख़ुदा का कलाम उतरा ऐसा ही मुझ पर भी उतरा, जैसे चमत्कार उनकी ओर सम्बद्ध किए जाते हैं मैं निश्चित तौर पर उन चमत्कारों को स्वयं पर चरितार्थ होते हुए देखता हूँ अपितु उन से कहीं अधिक। यह समस्त प्रतिष्ठा मुझे केवल एक नबी के अनुसरण से प्राप्त हुई है, जिसके पदों और श्रेणियों से संसार अज्ञान है अर्थात् हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। यह अजीब अत्याचार है कि मूर्ख और नादान लोग कहते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर जीवित है हालांकि जीवित होने के लक्षण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हस्ती में पाता हूँ। वह ख़ुदा जिसको संसार नहीं जानता हमने इस ख़ुदा को इस नबी के द्वारा देख लिया और ख़ुदा की वह्यी का द्वार जो अन्य क़ौमों पर बन्द है, हम पर केवल उस नबी की बरकत से खोला गया और वे चमत्कार जिन का अन्य क़ौमें केवल किस्से और कहानियों के तौर पर वर्णन करती हैं हमने उस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा वे चमत्कार भी देख लिए। और हमने उस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वह मर्तबा पाया जिसके आगे कोई मर्तबा नहीं परन्तु आश्चर्य है कि संसार इस से अनभिज्ञ है। मुझे कहते हैं कि मसीह मौऊद होने का दावा क्यों किया परन्तु में सच-सच कहता हूँ कि उस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्ण अनुकरण से एक व्यक्ति ईसा अलैहिस्सलाम से बढ़कर भी हो सकता है। अंधे कहते हैं कि यह कुफ़्र है। मैं कहता

हूँ कि तुम स्वयं ईमान से खाली हो फिर तुम क्या जानते हो कि कुफ्र क्या चीज़ है, कुफ्र स्वयं तुम्हारे अन्दर है यदि तुम जानते कि इस आयत के क्या अर्थ हैं – **इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम सिरातल्लज़ीना अनअम्ता अलैहिम*** (अलफ़ातिह: 6,7) तो ऐसा कुफ्र ज़बान पर न लाते। ख़ुदा तो तुम्हें यह प्रेरणा देता है कि तुम उस रसूल के पूर्ण अनुकरण की बरकत से समस्त रसूलों की भिन्न-भिन्न विशेषताएं अपने अन्दर एकत्र कर सकते हो और तुम केवल एक नबी की विशेषताएं प्राप्त करना कुफ्र समझते हो।

अत: आप पर अनिवार्य है कि इस मार्ग की ओर ध्यान दो कि एक सच्चा धर्म जो ख़ुदा तआला की ओर से है क्योंकर पहचाना जा सकता है। स्मरण रहे कि सच्चा धर्म वही है जिस के द्वारा ख़ुदा का पता लगता है। दूसरे धर्मों में केवल मानव प्रयासों को प्रस्तुत किया जाता है मानो इन्सान का ख़ुदा पर उपकार है कि उसने उसका पता दिया परन्तु इस्लाम में स्वयं ख़ुदा तआला हर युग में अपने "**अनल मौजूद**" (अर्थात मैं विद्यमान हूँ) के स्वर से अपनी हस्ती का पता देता है जैसा कि इस युग में भी वह मुझ पर प्रकट हुआ। अत: इस रसूल पर हज़ारों सलाम और बरकतें जिसके द्वारा हमने ख़ुदा को पहचाना।

अन्तत: मैं पुन: खेद पूर्वक लिखता हूँ कि आप का यह कहना कि हज़रत मरयम का हारून की बहन होना आप पर दुष्प्रभाव डालता है, मेरी दृष्टि में आपकी नितान्त अनभिज्ञता को दर्शाता है। इस निरर्थक आरोप पर पहले विद्वानों ने भी बहुत कुछ लिखा है। यदि उपमा के

---

*अनुवाद - हे ख़ुदा हमें सद्मार्ग दिखा, वह सद्मार्ग जिस पर चलने वालों पर तूने ईनाम किया- (अनुवादक)

रंग में या किसी और आधार पर ख़ुदा तआला ने मरयम को हारून की बहन ठहराया तो आपको इस पर क्यों आश्चर्य हुआ जबकि पवित्र क़ुर्आन स्वयं बारम्बार वर्णन कर चुका है कि हारून नबी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के समय में था और यह मरयम हज़रत ईसा की माँ थी जो हारून के चौदह सौ वर्ष के पश्चात् पैदा हुई। तो क्या इससे सिद्ध होता है कि ख़ुदा तआला इन घटनाओं से अनभिज्ञ है और नाऊज़ुबिल्लाह (हम ख़ुदा से क्षमा मांगते हैं) उसने मरयम को हारून की बहन ठहराने में भूल की है। ये किस श्रेणी के दुष्ट लोग हैं कि अनगर्ल आरोप लगाकर प्रसन्न होते हैं। संभव है कि मरयम का कोई भाई हो जिसका नाम हारून हो। किसी वस्तु का ज्ञान न होने से उसके अस्तित्व को नहीं नकारा जा सकता। परन्तु ये लोग अपने गरेबान में झांक कर नहीं देखते कि इंजील कितने आरोपों के निशाने पर है। विचार करो कि यह कितना गंभीर आरोप है कि मरयम को हैकल (यहूदियों का पूजा घर) बैतुल मुक़द्दस को समर्पित कर दिया गया था ताकि वह हमेशा सेविका बनी रहे और जीवन पर्यन्त विवाह न करे। परन्तु छः - सात माह का गर्भ प्रकट हो गया, तब गर्भावस्था में ही क़ौम के बुज़ुर्गों ने मरयम का यूसुफ़ नामक एक बढ़ई से निकाह कर दिया और उसके घर जाते ही एक दो माह पश्चात् मरयम को बेटा पैदा हुआ जिसका नाम ईसा या यसू रखा गया? अब आरोप यह है कि यदि वास्तव में यह गर्भ चमत्कार स्वरूप था तो प्रसव तक क्यों धैर्य से काम नहीं लिया गया? दूसरा आरोप यह है कि प्रतिज्ञा तो यह थी कि मरयम जीवन-पर्यन्त हैकल की सेवा में रहेगी, फिर क्यों उस प्रतिज्ञा को तोड़ कर उसे हैकल की सेवा से हटा कर यूसुफ़ बढ़ई की पत्नी बनाया गया?

तीसरा आरोप यह है कि तौरात (बाईबल) की दृष्टि से सर्वथा अवैध और नाजायज़ था कि गर्भावस्था में किसी स्त्री का निकाह कराया जाए। फिर क्यों तौरात के आदेश के विरुद्ध मरयम का निकाह गर्भावस्था में यूसुफ़ से किया गया? जबकि यूसुफ़ इस निकाह से खिन्न था। उसकी पहली पत्नी मौजूद थी। वे लोग जो एक से अधिक पत्नियों के विरुद्ध हैं, कदाचित उनको यूसुफ़ के इस निकाह की सूचना नहीं। अत: इस अवसर पर एक आरोप लगाने वाले का अधिकार है कि वह यह सोचे कि इस निकाह का कारण यही था कि क़ौम के बुज़ुर्गों को मरयम के अवैध गर्भ का संदेह हो गया था। यद्यपि हम पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा की दृष्टि से यह विश्वास रखते हैं कि वह गर्भ केवल ख़ुदा की क़ुदरत से था ताकि ख़ुदा तआला यहूदियों को क़यामत का निशान दे। और जिस प्रकार वर्षा के दिनों में हज़ारों कीड़े-मकोड़े स्वयं पैदा हो जाते हैं और हज़रत आदम भी बिना माता-पिता के पैदा हुए। तो फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इस प्रकार पैदा होने से उनकी कोई श्रेष्ठता सिद्ध नहीं होती अपितु बिना बाप पैदा होना कुछ शक्तियों से वंचित होने को सिद्ध करता है। संक्षेप में यह कि हज़रत मरयम का निकाह केवल शंका के कारण हुआ था अन्यथा जो स्त्री "बैतुल मुक़द्दस" की सेवा के लिए समर्पित हो चुकी थी उसके निकाह की क्या आवश्यकता थी? खेद है कि इस निकाह से बड़े उपद्रव उत्पन्न हुए और दुष्ट यहूदियों ने अवैध संबधों की आशंकाएँ प्रकाशित कीं। अत: यदि कोई आरोप समाधान-योग्य है तो यह है न कि हारून को मरयम का भाई ठहराना। पवित्र क़ुर्आन में तो यह शब्द भी नहीं कि मरयम हारून नबी की बहन थी। मात्र हारून का नाम है, नबी का शब्द वहाँ मौजूद नहीं। मूल बात

यह है कि यहूदियों में यह रिवाज था कि नबियों के नाम बरकत के तौर पर रखे जाते थे। अत: संभव है कि मरयम का कोई भाई होगा जिसका नाम हारून रहा होगा और इस बात को आरोप योग्य समझना निपट मूर्खता है।

"असहाबे कहफ़" इत्यादि का क़िस्सा अगर यहूदियों और ईसाइयों की पहली किताबों में भी हो और यदि मान लें कि वे लोग इन क़िस्सों को काल्पनिक किस्से समझते हों तो इसमें क्या हानि है। आपको स्मरण रहे कि इन लोगं की धार्मिक और ऐतिहासिक पुस्तकें और स्वयं उनकी आसमानी किताबें अंधकार में पड़ी हुई हैं। आप को इस बात का ज्ञान नहीं कि यूरोप में इन पुस्तकों के बारे में आजकल कितना शोक मनाया जा रहा है और सुशील स्वभाव लोग स्वयं इस्लाम की ओर आते जा रहे हैं इस्लाम के समर्थन में बड़ी-बड़ी किताबें लिखी जा रही हैं। अत: अमरीका इत्यादि देशों के कई अंग्रेज़ हमारी जमाअत में शामिल हो गए हैं, आख़िर झूठ कब तक छुपा रहेगा। विचार करने की बात है कि ख़ुदा की वह्यी को ऐसी किताबों के प्रलेखों की क्या आवश्यकता थी। भली-भांति स्मरण रखो कि ये लोग अन्धे हैं और इनकी समस्त किताबें अन्धी हैं। आश्चर्य है कि जिन परिस्थितियों में क़ुर्आन शरीफ़ ऐसे द्वीप में उतरा जहाँ के लोग सामान्य तौर पर ईसाइयों और यहूदियों की किताबों से अनभिज्ञ थे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं अनपढ़ थे। अत: आप पर यह आरोप लगाना उन लोगों का काम है जो ख़ुदा से बिल्कुल निर्भीक हैं। यदि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ये आरोप लगाए जा सकते हैं तो फिर हज़रत ईसा पर किस क़दर आरोप लगेंगे जिन्होंने एक इस्राईली विद्वान से तौरात को पढ़ा

था और यहूदियों की समस्त किताबों 'तालमूद' इत्यादि का अध्ययन था, जिनकी इंजील वास्तव में बाईबल और तालमूद के लेखों से ऐसी भरी पड़ी है कि हम लोग केवल क़ुर्आन शरीफ़ के आदेश के कारण उन पर ईमान लाते हैं अन्यथा इंजीलों के बारे में बड़ी-बड़ी शंकाए पैदा होती हैं। खेद कि इंजीलों में एक बात भी ऐसी नहीं जो अक्षरश: पूर्वकालीन किताबों में विद्यमान न हो। और फिर यदि क़ुर्आन ने बाइबल की विभिन्न सच्चाइयों को एक स्थान पर एकत्र कर दिया तो इसमें कौन सी बात बुद्धिमता से दूर हुई और कौन सी विपत्ति आ गई? क्या आप के निकट यह असंभव है कि पवित्र क़ुर्आन के ये समस्त क़िस्से वह्यी द्वारा लिए गए हैं जबकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साहिबे वह्यी होना (वह्यी वाला, जिस पर ख़ुदा का कलाम उतरता हो) अकाट्य तर्कों से सिद्ध है और आप की सच्ची नुबुव्वत के प्रकाश और विभूतियाँ अब तक प्रकट हो रही हैं तो शैतानी विचार क्यों हृदय में पैदा किए जाएँ कि नाऊज़ुबिल्लाह पवित्र क़ुर्आन का कोई क़िस्सा किसी पहली किताब या किसी शिला-लेख से नक़ल किया गया है। क्या आपको ख़ुदा तआला की हस्ती के बारे में कोई शंका है या आप उसे अन्तर्यामी होने पर समर्थ नहीं समझते। मैं वर्णन कर चुका हूँ कि ईसाइयों और यहूदियों का किसी किताब को असली बताना और किसी को काल्पनिक समझना ये सब निराधार विचार हैं। न किसी ने असल की असलियत को देखा और न किसी ने किसी धोकेबाज़ को पकड़ा। इसके बारे में स्वयं यूरोप के विद्वानों के साक्ष्य हमारे पास मौजूद हैं। एक अंधी क़ौम है जिनमें ईमानी प्रकाश शेष नहीं रहा। और ईसाइयों पर तो नितान्त खेद है जिन्होंने भौतिकी और दर्शन पढ़कर डुबो दिया।

एक ओर तो आसमानों के इन्कारी हैं और दूसरी ओर हज़रत ईसा को आसमान पर बैठाते हैं। सच तो यह है कि यदि यहूदियों की पहली किताबें सच्ची हैं तो उनके आधार पर हज़रत ईसा की नुबुव्वत ही सिद्ध नहीं होती। उदाहरणतया सच्चे मसीह मौऊद के लिए जिस का हज़रत ईसा को दावा है मलाकी नबी की किताब की दृष्टि से यह आवश्यक था कि उस से पहले इल्यास नबी दोबारा संसार में आता परन्तु इल्यास तो अब तक नहीं आया। वास्तव में यहूदियों की ओर से यह बहुत बड़ा तर्क है जिसका उत्तर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम स्पष्ट रूप से नहीं दे सके। यह पवित्र क़ुर्आन का हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर उपकार है कि उसकी नुबुव्वत की घोषणा की। और कफ्फ़ारे का विषय तो हज़रत ईसा ने स्वयं रद्द कर दिया है जबकि कहा मेरा उदाहरण यूनुस नबी की भाँति है जो तीन दिन मछली के पेट में जीवित रहा। अब यदि ईसा अलैहिस्सलाम वास्तव में सलीब पर मर गए थे तो उनकी यूनुस से उपमा कैसी और यूनुस से उनका क्या सबन्ध? इस उदाहरण से स्पष्ट सिद्ध होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सलीब पर मरे नहीं, अपितु यूनुस की भाँति बेहोश हो गए थे और "मरहम-ए-ईसा" नामक नुस्खा जिसकी चर्चा लगभग समस्त चिकित्सा सम्बन्धी किताबों में पाई जाती है, उसके प्रसंग में लिखा है कि यह नुस्खा हज़रत ईसा के लिए तैयार किया गया था अर्थात उनकी चोटों के लिए जो उन्हें सलीब पर आई थीं। अगर दर खाना कस अस्त हमीं क़द्र बस अस्त*।

* अनुवाद- यदि घर में कोई एक है तो वही पर्याप्त है। कहने का भाव यह है कि बहुत सारे प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं जब यह नुस्खा 'मरहम-ए-ईसा' मौजूद है तो उनके सलीब से जीवित बचने के लिए यह एक प्रमाण ही पर्याप्त है। अनुवादक

उपसंहार: वास्तविक मुक्ति क्या है?

इस पुस्तक को समाप्त करने से पूर्व मैं उचित समझता हूं कि वास्तविक मुक्ति का कुछ वर्णन किया जाए क्योंकि समस्त धर्मावलंबियों का किसी धर्म के अनुसरण से यही अभिप्राय और उद्देश्य होता है कि मुक्ति प्राप्त हो, परंतु अफसोस कि अधिकतर लोग मुक्ति के वास्तविक अर्थों से अपरिचित और अनभिज्ञ हैं। ईसाइयों के निकट मुक्ति के ये अर्थ हैं कि पाप के दंड से रिहाई हो जाए। लेकिन वास्तव में मुक्ति के यह अर्थ नहीं हैं और संभव है कि एक व्यक्ति न व्यभिचार करे, न चोरी करे, न झूठी गवाही दे, न खून करे और न किसी अन्य पाप में, जहां तक उसका ज्ञान है, लिप्त हो। और साथ ही मुक्ति की हालत से बेनसीब और वंचित हो क्योंकि वास्तव में मुक्ति उस अनादि ख़ुशहाली को प्राप्त करने का नाम है जिसकी भूख और प्यास इंसानी स्वभाव को लगा दी गई है। जो केवल ख़ुदा तआला की व्यक्तिगत मुहब्बत और उसकी पूरी मारिफत और उसके पूरे संबंध के बाद प्राप्त होती है जिसमें शर्त यह है कि दोनों ओर से मुहब्बत जोश मारे परंतु कभी-कभी इंसान अपने ग़लत कामों से ऐसी चीज़ों में अपनी इस खुशहाली को तलाश करता है कि जिन से अंततः कष्ट तथा अप्रसन्नता और भी बढ़ती है। अतः अधिकतर लोग संसार की तामसिक अय्याशियों में खुशहाली को तलाश करते हैं और दिन रात शराब ख़ोरी और काम-वासनाओं में लिप्त रह कर परिणामस्वरूप भिन्न-भिन्न प्रकार की भयानक बीमारियों में ग्रस्त हो जाते हैं और अंततः मूर्छारोग,

लक्वा, कंपरोग और कुज़ाज़* या आन्तड़ियों या जिगर के फोड़ों में गिरफ्तार होकर और या आतशक* तथा सोज़ाक* की लज्जाजनक बीमारियों में लिप्त होकर इस संसार से कूच करते चले जाते हैं और इसके कारण उनकी शक्तियां समय से पूर्व ही कमज़ोर हो जाती हैं। इसलिए वे स्वाभाविक आयु से भी वंचित रहते हैं और परिणाम स्वरूप उनको इस बात का पता लग जाता है कि जिन चीज़ों को उन्होंने अपनी खुशहाली का माध्यम समझा था वास्तव में वही चीज़ें उनकी तबाही का कारण थीं। और कुछ लोग सांसारिक सम्मान और प्रतिष्ठा के बढ़ाने और पदों और मर्तबों को पाने में अपनी ख़ुशाली समझते हैं और अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य से अपरिचित रहते हैं। परंतु अंततः वह भी हसरत से मरते हैं और कुछ इसी इच्छा से दुनिया का माल इकट्ठा करते रहते हैं कि शायद इसी में ख़ुशहाली पैदा हो परंतु परिणाम यह होता है कि अपनी उस समस्त धन-संपत्ति को छोड़कर बड़े दर्द और दुख के साथ और बड़े कष्ट के साथ मौत का प्याला पीते हैं। अतः सत्य के जिज्ञासु के लिए जो विचार करने योग्य प्रश्न है वह यही है कि सच्ची खुशहाली कैसे प्राप्त हो, जो शाश्वत प्रसन्नता और खुशी का कारण हो और वास्तव में सच्चे धर्म की यही निशानी है कि वह उस खुशहाली तक पहुंचा दे। अतः हम क़ुर्आन शरीफ की

*कुज़ाज़- अर्थात रगों और पट्ठों के खिंचाव से उत्पन्न होने वाली एक पीड़ा। (अनुवादक)

*आतशक- उपदंश, एक रोग जिसमे गुप्तांगों पर दाने निकल कर ज़ख्म बन जाते हैं। (अनुवादक)

*सोज़ाक- मूत्राघात, एक रोग जिसमें पेशाब की नाली में घाव हो जाने के कारण पीप आती रहती है। (अनुवादक)

हिदायत से इस सूक्ष्माति सूक्ष्म बिंदु तक पहुंचते हैं कि वह शाश्वत ख़ुशहाली ख़ुदा तआला की सही पहचान और फिर उस अद्वितीय की पवित्र और पूर्ण और व्यक्तिगत मुहब्बत और पूर्ण ईमान में है जो दिल में आशिकाना बेक़रारी पैदा करे। यह कुछ शब्द कहने को तो बहुत थोड़े हैं परंतु उनकी हालत को बयान करने के लिए एक पुस्तकालय भी पर्याप्त नहीं हो सकता।

याद रहे कि अल्लाह तआला की सही पहचान की कई निशानियां है उनमें से एक यह भी है कि उसकी क़ुदरत और तौहीद और ज्ञान और हर एक विशेषता और गुण पर कोई कमी का दाग न लगाया जाए क्योंकि जिस हस्ती का कण-कण पर आधिपत्य है और जिसके कब्ज़े में रूहों की समस्त फ़ौजें तथा धरती और आकाश की समस्त शक्तियां हैं, वह अगर अपनी क़ुदरतों और हिकमतों और शक्तियों में कमज़ोर हो तो इस शारीरिक एवं आध्यात्मिक संसार का काम चल ही नहीं सकता। अगर नाऊज़ुबिल्ला यह आस्था रखी जाए कि कण और उनकी समस्त शक्तियां तथा रूहें और उनकी समस्त शक्तियां स्वयंभू हैं तो मानना पड़ता है कि ख़ुदा तआला का ज्ञान और तौहीद और क़ुदरत तीनों कमज़ोर हैं। कारण यह कि अगर समस्त रूहें और कण ख़ुदा तआला के हाथ से पैदा किए हुए नहीं तो कोई कारण नहीं कि हमें इस बात का विश्वास हो कि ख़ुदा तआला को उनके आंतरिक हालतों का ज्ञान है और जबकि उसके ज्ञान पर कोई दलील स्थापित नहीं बल्कि उसके विरुद्ध दलील मौजूद है। तो इससे अनिवार्य ठहरता है कि हमारी तरह ख़ुदा तआला भी इन चीज़ों की वास्तविक जड़ से अनभिज्ञ है और उसका ज्ञान उनके गुप्त से गुप्त भेदों पर हावी नहीं

है। स्पष्ट है कि जैसे उदाहरणतया एक दवा अपने हाथ से तैयार की जाती है या अपनी नज़र के सामने एक शरबत या गोलियां या कुछ दवाओं का अर्क़ तैयार किया जाता है तो इस कारण से कि हम स्वयं उस नुस्खा के बनाने वाले हैं हमें उन समस्त दवाओं का पूरा ज्ञान होता है। और हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह अमुक-अमुक दवा है और अमुक-अमुक वज़न के साथ इस उद्देश्य के लिए बनाई गई है। लेकिन अगर कोई अर्क़ या गोलियां या शरबत ऐसा नामालूम हो जिसको हमने बनाया नहीं और न हम उन अंशों को अलग-अलग कर सकते हैं तो हम अवश्य उन दवाओं से अपरिचित होंगे और यह बात तो स्पष्ट है कि अगर ख़ुदा तआला को लोगों का बनाने वाला या सृष्टा मान लिया जाए तो साथ ही मानना पड़ेगा कि अवश्य ख़ुदा तआला को उन समस्त कणों और रूहों की छुपी हुई शक्तियों और ताकतों का ज्ञान भी है। और इस पर दलील यह है कि वह स्वयं उन शक्तियों और ताकतों का बनाने वाला है और बनाने वाला अपनी बनाई हुई चीज़ से अपरिचित नहीं होता। परंतु अगर यह सूरत हो कि वह इन शक्तियों और ताकतों का बनाने वाला नहीं है तो कोई दलील इस पर स्थापित नहीं हो सकती कि उसको उन समस्त शक्तियों और ताकतों का ज्ञान भी है। अगर तुम बिना दलील के कह दो कि उसको ज्ञान है तो यह एक ज़बरदस्ती है और केवल एक दावा है। लेकिन जैसा कि यह दलील हमारे हाथ में है कि बनाने वाला अवश्य अपनी बनाई हुई चीज़ का ज्ञान रखता है उसके मुकाबले पर कौन सी दलील आपके हाथ में है कि जो चीज़ें ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से बनाई नहीं उसको उनकी समस्त छुपी हुई शक्तियों और ताकतों का ज्ञान

है? क्योंकि वह चीज़ें ख़ुदा तआला का अपना अस्तित्व तो नहीं ताकि जैसा कि अपने अस्तित्व का ज्ञान होता है उनका भी ज्ञान हो। बल्कि वे तमाम चीज़ें आर्य समाज की आस्था के दृष्टिकोण से अपने-अपने अस्तित्व की स्वयं ही ख़ुदा हैं और स्वयं ही अनादि और प्राचीन हैं। और स्वयंभू तथा प्राचीन होने के कारण परमेश्वर से ऐसी असंबंधित हैं कि अगर उस परमेश्वर का मरना भी अनुमान कर लें तो इन चीज़ों का कुछ भी नुकसान नहीं क्योंकि जिस अवस्था में परमेश्वर इन शक्तियों और ताकतों का पैदा करने वाला नहीं तो वे चीज़ें अपने जीवन में भी परमेश्वर की मोहताज नहीं जैसा कि अपने पैदा होने में मोहताज नहीं। और ख़ुदा तआला के दो नाम हैं- (1) **हय्युन** (2) **क़य्यूम**। **हय्युन** का यह अर्थ है कि वह स्वयं जीवित है और दूसरी चीज़ों को जीवन प्रदान करने वाला है। और **क़य्यूम** के यह अर्थ हैं कि अपने अस्तित्व में स्वयं स्थापित और अपनी पैदा की हुई चीज़ों को अपने सहारे से बाकी रखने वाला। अत: ख़ुदा तआला के नाम **क़य्यूम** से वह चीज़ लाभ उठा सकती है जो उससे पहले उसके नाम **हय्युन** से लाभ उठा चुकी हो। क्योंकि ख़ुदा तआला अपनी पैदा की हुई चीज़ों को सहारा देता है न ऐसी चीज़ों को जिनके वजूद और अस्तित्व को उसका हाथ ही नहीं छुआ। अत: जो व्यक्ति ख़ुदा तआला को '**हय्युन**' अर्थात पैदा करने वाला मानता है उसी का अधिकार है कि उसको '**क़य्यूम**' भी माने अर्थात अपनी पैदा की हुई चीज़ को अपने अस्तित्व से सहारा देने वाला परंतु जो व्यक्ति ख़ुदा तआला को '**हय्युन**' अर्थात पैदा करने वाला नहीं मानता उसका यह अधिकार नहीं है कि उसके बारे में यह आस्था रखे कि वह उन चीज़ों को उनके रहने में सहारा देने वाला

है क्योंकि सहारा देने के ये अर्थ हैं कि अगर उस का सहारा न हो तो वह चीज़ें नष्ट हो जाएं और स्पष्ट है कि जिन चीज़ों को उसने पैदा नहीं किया वह चीज़ें अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उसकी मोहताज भी नहीं हो सकतीं। और अगर वह जीवित रहने के लिए मोहताज हैं तो पैदाइश में भी उस अस्तित्व की मोहताज हैं। अत: ख़ुदा तआला के यह दोनों नाम '**हय्युन**' और '**क़य्यूम**' अपने प्रभाव में एक दूसरे से संबंध रखते हैं कभी अलग-अलग नहीं हो सकते। अत: जिन लोगों का यह धर्म है कि ख़ुदा रूहों और कणों का पैदा करने वाला नहीं वह अगर बुद्धि और विवेक से कुछ काम लें तो उनको स्वीकार करना पड़ेगा कि ख़ुदा तआला इन चीज़ों को स्थापित रखने वाला भी नहीं अर्थात वे यह नहीं कह सकते कि ख़ुदा तआला के सहारे से कण या रूहें पैदा हुई हैं बल्कि ख़ुदा तआला के सहारे की मोहताज वे चीज़ें हैं जो उसकी पैदा की हुई हैं। किसी अन्य को जो अपने अस्तित्व के लिए उसका मोहताज नहीं उसके सहारे की कैसे आवश्यकता पड़ गई? यह दावा बे दलील है। और हम अभी यह भी लिख चुके हैं कि अगर कण और रूहों को प्राचीन और अनादि और स्वयंभू माना जाए तो इस बात पर कोई दलील स्थापित नहीं हो सकती कि ख़ुदा तआला को उनकी छुपी हुई विशेषताओं और अत्यंत गोपनीय शक्तियों और ताकतों का ज्ञान है और यह कहना क्योंकि वह उनका परमेश्वर है इसलिए उसको उनके गोपनीय गुणों और शक्तियों का ज्ञान है यह केवल एक दावा है जिस पर कोई दलील स्थापित नहीं की गई और कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया और न कोई रिश्ता मनुष्यता और ख़ुदाई का सिद्ध किया गया बल्कि वह उनका परमेश्वर ही नहीं। भला

जिसका कणों और रूहों से स्रष्टा होने का कोई संबंध नहीं वह उनका परमेश्वर कैसे हुआ? और किन अर्थों से कह सकते हैं कि वह रूहों और कणों का परमेश्वर है और यह संबंध किस आधार पर हो सकता है कि ख़ुदा रूहों और कणों का परमेश्वर है? या तो संबंध मिल्कियत का होता है जैसे कहा जाए कि ग़ुलाम-ए-ज़ैद अर्थात ज़ैद का गुलाम। अत: मिल्कियत होने का कोई कारण चाहिए और कोई वजह मालूम नहीं होती कि क्यों स्वतंत्र वस्तुओं को जो सदा से अपनी शक्तियां अपने पास रखती हैं अकारण परमेश्वर की मिल्कियत करार दिया जाए। और या संबंध किसी रिश्ते की वजह से होता है जैसा कि कहा जाए की अमुक का पिता परंतु जबकि रूहों और कणों का परमेश्वर के साथ कोई संबंध मनुष्यता का नहीं तो यह संबंध भी नाजायज़ है और इस हालत में यह बात बिल्कुल सच है कि ऐसी असंबंधित रूहों के लिए न तो परमेश्वर का वजूद कुछ लाभकारी है और न उसका ना होना कुछ हानिकारक है बल्कि ऐसी अवस्था में नजात जिसको आर्य समाज वाले मुक्ति कहते हैं बिल्कुल असंभव है। क्योंकि मुक्ति का समस्त आधार ख़ुदा तआला की व्यक्तिगत मुहब्बत पर है और व्यक्तिगत मुहब्बत उस मुहब्बत का नाम है जो रूहों की फितरत में ख़ुदा तआला की तरफ से पैदा की गई है। फिर जिस हालत में रूहें परमेश्वर की पैदा की हुई नहीं हैं तो फिर उनकी फितरती मुहब्बत परमेश्वर से कैसे हो सकती है और कब और किस समय परमेश्वर ने उनकी फितरत के अंदर हाथ डालकर यह मुहब्बत उसमें रख दी? यह तो असंभव है। कारण यह कि फितरती मुहब्बत उस मुहब्बत का नाम है जो फितरत के साथ हमेशा से लगी हुई हो और पीछे से नाजोड़ी गई हो जैसा कि इसी

की ओर अल्लाह तआला क़ुर्आन शरीफ़ में संकेत करता है जैसा कि उसका यह कथन है-

اَلَسۡتُ بِرَبِّكُمۡ ؕ قَالُوۡا بَلٰى (सूरः आराफ़ - 7/173)

अर्थात मैंने रूहों से प्रश्न किया कि क्या मैं तुम्हारा पैदा करने वाला नहीं हूं तो उन्होंने उत्तर दिया कि क्यों नहीं? इस आयत का यह अर्थ है कि इंसानी रूह की फितरत में यह गवाही मौजूद है कि उसका ख़ुदा पैदा करने वाला है। अतः रूहों को अपने पैदा करने वाले से स्वाभाविक रूप से मुहब्बत है इसलिए कि वह उसी की उत्पत्ति है, और इसी की ओर इस दूसरी आयत में संकेत है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

فِطۡرَتَ اللّٰهِ الَّتِىۡ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيۡهَا ؕ (सूरः रूम-30/31)

अर्थात रूह का एक ख़ुदा का इच्छुक होना और बग़ैर ख़ुदा की मुलाकात के किसी चीज़ से वास्तविक खुशहाली न पाना यह इंसानी स्वभाव में सम्मिलित है अर्थात ख़ुदा ने इस इच्छा को मानवीय रूह में पैदा कर रखा है कि इंसान की रूह सिवाय अल्लाह तआला के किसी चीज़ से संतुष्टि और तसल्ली नहीं पा सकती। अतः अगर इंसानी रूह में यह इच्छा मौजूद है तो अवश्य मानना पड़ता है कि रूह ख़ुदा की पैदा की हुई है जिसने उसमें यह इच्छा डाल रखी है। परंतु यह इच्छा जो वास्तव में इंसानी रूह में मौजूद है इस से सिद्ध हुआ कि इंसानी रूह असल में ख़ुदा की पैदा की हुई है। यह कायदा की बात है कि दो चीज़ों में व्यक्तिगत संबंध जितना होगा उतना ही उस संबंध के कारण मुहब्बत भी पैदा हो जाती है, जैसा कि मां को अपने बच्चे से मुहब्बत होती है और बच्चे को अपनी मां से क्योंकि

वह उसके खून से पैदा हुआ है और उसके गर्भ में परवरिश पाई है। अत: यदि रूहों को ख़ुदा तआला के साथ पैदाइश का कोई संबंध नहीं और वे अनादि और स्वयंभू हैं तो बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती कि उनकी फितरत में ख़ुदा तआला की मुहब्बत हो। और जब उनकी फितरत में परमेश्वर की मुहब्बत नहीं तो वह किसी तरह मुक्ति पा ही नहीं सकती।

असल हक़ीक़त और असल स्रोत मुक्ति का व्यक्तिगत मुहब्बत है जो अल्लाह तआला से मिलाती है। कारण यह है कि कोई मुहब्बत करने वाला अपने महबूब से जुदा नहीं रह सकता और क्योंकि ख़ुदा स्वयं नूर है इसलिए उसकी मुहब्बत से मुक्ति का नूर पैदा हो जाता है और वह मुहब्बत जो इंसान की फितरत में है ख़ुदा तआला की मुहब्बत को अपनी ओर खींचती है। इसी प्रकार ख़ुदा तआला की व्यक्तिगत मुहब्बत इंसान की व्यक्तिगत मुहब्बत में एक विलक्षण जोश पैदा करती है और उन दोनों मुहब्बतों के मिलने से एक फना की हालत पैदा होकर अल्लाह का नूर पैदा हो जाता है और यह बात कि दोनों मुहब्बतों का परस्पर मिलना आवश्यक रूप से उस परिणाम को पैदा करता है कि ऐसे इंसान का अंजाम 'फ़ना फ़िल्ला' हो और यह वजूद ख़ाक होकर (जो पर्दा है) रूह पूर्णता ख़ुदा के इश्क में डूब जाए। उसकी मिसाल वह हालत है कि जब इंसान पर आसमान से बिजली पड़ती है तो उस आग के आकर्षण से इंसान के बदन की आंतरिक अग्नि सहसा बाहर आ जाती है तो इसका परिणाम शारीरिक फ़ना होता है। अत: वास्तव में यह रूहानी मौत भी इसी प्रकार दो तरह की आग को चाहती है। एक आसमानी आग और एक आंतरिक आग

और दोनों के मिलने से वह फ़ना पैदा हो जाती है जिसके बिना सलूक (साधना) पूर्ण नहीं हो सकता। यही फ़ना वह चीज़ है जिस पर साधकों की साधना ख़त्म हो जाती है जो इंसानी संघर्ष की अंतिम सीमा है। इसी फना के बाद कृपा और उपकार के तौर पर बक़ा (मुक्ति) का मर्तबा इंसान को प्राप्त होता है। इसी की ओर इस आयत में संकेत है-

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (सूरः फ़ातिहा- 1/7)

इस आयत का सारांश यह है कि जिस व्यक्ति को यह मर्तबा मिला उपकार स्वरूप मिला अर्थात केवल कृपा से न किसी कर्म के कर्मफल से★ और यह ख़ुदा के इश्क का अंतिम परिणाम है जिससे हमेशा का जीवन प्राप्त होता है और मौत से मुक्ति होती है। हमेशा का जीवन सिवाय अल्लाह तआला के किसी का अधिकार नहीं वही हमेशा जीवित रहने वाला है। अतः मनुष्यों में से उसी व्यक्ति को यह शाश्वत जीवन प्रदान होता है जो अन्यों की मुहब्बत से अपना संबंध तोड़कर और अपनी व्यक्तिगत मुहब्बत के साथ ख़ुदा तआला में फ़ना होकर प्रतिरूपी तौर पर उससे शाश्वत जीवन का अंश लेता है और ऐसे व्यक्ति को मुर्दा कहना अनुचित है क्योंकि वह ख़ुदा में फ़ना हो कर जीवित हो गया है। मुर्दे वे लोग हैं जो

★ मनुष्य चूंकि अपनी मनुष्यता की कमज़ोरी के कारण ऐसे कर्म नहीं कर सकता जिनसे असीमित और ग़ैर महदूद नेमतों का वारिस हो जाए और इन नेमतों को प्राप्त किए बग़ैर सच्ची और वास्तविक मुक्ति पा ही नहीं सकता। इसलिए इंसान जब अपनी शक्ति और ताक़त की सीमा तक संघर्ष और जप-तप कर लेता है तब ख़ुदा तआला की कृपा उसकी कमज़ोरी पर दया करके केवल उपकार से उसकी सहायता करती है और मुफ्त के तौर पर ख़ुदा की कृपा ख़ुदा से मिलाप का वह ईनाम उसको देती है जो उससे पहले नेक लोगों को दिया गया था। इसी से।

ख़ुदा से दूर रहकर मर गए। अत: सख्त काफ़िर और अधर्मी और मुश्रिक वे लोग हैं जो बिना व्यक्तिगत मुहब्बत को पाए और बिना ख़ुदा से मिले समस्त रूहों के बारे में अनादि और प्राचीन जीवन के समर्थक हैं। बल्कि सच तो यह है कि ख़ुदा के अतिरिक्त किसी चीज़ की कोई हस्ती नहीं, केवल ख़ुदा है जिसका नाम 'हस्त' है। फिर उसकी छत्रछाया में आकर और उसकी मुहब्बत में डूब कर अभिलाषियों की रूहें वास्तविक जीवन पाती हैं और उसके मिलाप के बिना जीवन प्राप्त नहीं हो सकता। इसी कारण अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में काफ़िरों का नाम मुर्दे रखता है और नर्क वालों के बारे में फ़रमाता है-

اِنَّهٗ مَنۡ يَّاۡتِ رَبَّهٗ مُجۡرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوۡتُ فِيۡهَا وَ لَا يَحۡيٰى (सूर: ताहा- 20/75)

अर्थात जो व्यक्ति मुजरिम होने की अवस्था में अपने रब को मिलेगा उसके लिए नर्क है, न उसमें मरेगा और न जीवित रहेगा, अर्थात इसलिए नहीं मरेगा कि वास्तव में वह तअब्बुदे अबदी (शाश्वत उपासना) के लिए पैदा किया गया है। अत: उसका अस्तित्व आवश्यक है और उसको जीवित भी नहीं कह सकते क्योंकि वास्तविक जीवन ख़ुदा के मिलाप से प्राप्त होता है और वास्तविक जीवन साक्षात मुक्ति है और वह ख़ुदा की मुहब्बत और ख़ुदा से मिलाप के बिना हासिल नहीं हो सकती। यदि अन्य क़ौमों को वास्तविक जीवन की दार्शनिक ज्ञात होती तो वे कभी दावा न करते कि समस्त रूहें स्वयंभू और अनादिकाल से अपना अस्तित्व रखती हैं और वास्तविक जीवन से युक्त हैं। असल बात यह है

कि यह आसमानी ज्ञान हैं और आसमान से ही उतरते हैं और आसमानी लोग ही उनकी वास्तविकता को जानते हैं और दुनिया उनसे अपरिचित है।

अब हम फिर असल विषय की ओर लौट कर लिखते हैं कि शाश्वत मुक्ति का स्रोत ख़ुदा का मिलाप है और वही मुक्ति पाता है कि जो इस स्रोत से जीवन का पानी पीता है और वह मिलाप प्राप्त नहीं हो सकता जब तक कि पूर्ण पहचान और पूर्ण मुहब्बत और पूर्ण सच्चाई और पूर्ण ईमान न हो। और ख़ुदा की पूर्ण पहचान की पहली निशानी यह है कि ख़ुदा तआला के पूर्ण ज्ञान पर कोई दाग़ न लगाया जाए। और अभी हम सिद्ध कर चुके हैं कि जो लोग रूहों और शारीरिक कणों को अनादि और प्राचीन समझते हैं वे ख़ुदा तआला को पूर्ण रूप से परोक्ष का ज्ञाता नहीं समझते। इसी कारण यूनान के भटके हुए दार्शनिक जो रूहों को अनादि और प्राचीन समझते थे यह आस्था रखते थे कि ख़ुदा तआला को समस्त चीज़ों का ज्ञान नहीं क्योंकि जिस हालत में संसार की रूहें और कण प्राचीन और अनादि और स्वयंभू हैं और उनके वजूद ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हैं तो कोई दलील इस पर स्थापित नहीं हो सकती कि उनकी अत्यंत गुप्त शक्तियों और ताकतों और छुपे हुए भेदों का ख़ुदा को ज्ञान हो। यह तो स्पष्ट है कि वह पूर्ण ज्ञान जो अपने हाथ से बनाई हुई चीज़ों के आंतरिक भेदों के बारे में, समस्त परिस्थितियों और विवरणों सहित हो सकता है, उसके बराबर संभव नहीं कि दूसरी चीज़ों के आंतरिक भेद पूर्णत: ज्ञात हो सकें। बल्कि दूसरे ज्ञानों में ग़लती का अनुमान रह सकता है। अत:

इस जगह रूहों और कणों के अनादि और प्राचीन कहने वालों को इक़रार करना पड़ता है कि रूहों और कणों का वह ज्ञान जो ख़ुदा की शान के अनुकूल हो अर्थात जैसा कि ख़ुदा पूर्ण है वह ज्ञान भी पूर्ण हो। इस आस्था की दृष्टि से (जो रूहों और कणों को प्राचीन और अनादि जानने की आस्था है) उनके परमेश्वर को प्राप्त नहीं। और अगर कोई कहे कि प्राप्त है तो यह सबूत उसके ज़िम्मे है कि स्पष्ट दलील के द्वारा उसको सिद्ध करे न केवल दावे से। ज़ाहिर है कि जिस हालत में रूहें अनादि से स्वयंभू और अपने अस्तित्व की स्वयं ख़ुदा हैं तो इस अवस्था में मानो वे समस्त रूहें किसी अलग मोहल्ले में पूर्ण आधिपत्य के साथ रहती हैं और परमेश्वर अलग रहता है, आपस में कोई संबंध नहीं। और इस बात का कारण कुछ नहीं बता सकते कि समस्त रूहें और समस्त कण बावजूद अनादि और प्राचीन और स्वयंभू होने के परमेश्वर के अधीन कैसे हो गए? क्या किसी लड़ाई और जंग के बाद यह हालत प्रकटन में आई या स्वयं ही रूहों ने कुछ हितकारी समझ कर आज्ञापालन स्वीकार कर लिया। उनकी आस्था के अनुसार परमेश्वर दयालु और न्यायकर्ता तो अवश्य है परंतु फिर भी वह न दया करता है न न्याय क्योंकि वह केवल अपनी कमज़ोरी पर पर्दा डालने के लिए मुक्तिप्राप्त रूहों को शाश्वत मुक्ति नहीं देता। कारण यह कि अगर हमेशा के लिए रूहों को मुक्ति दे दे तो इससे निश्चित है कि किसी समय समस्त रूहें मुक्ति पाकर बार-बार संसार में आने से मुक्त हो जाएंगी। और परमेश्वर की यह इच्छा है कि संसार का सिलसिला भी चलता रहे ताकि उसकी हुकूमत की चमक-दमक बनी रहे। इसलिए वह किसी

रूह को शाश्वत मुक्ति देना ही नहीं चाहता। बल्कि चाहे कोई रूह अवतार या ऋषि या सिद्ध पुरुष के मर्तबे तक भी पहुंच गई हो फिर भी बार-बार उसको आवागमन के चक्कर में डालता है। मगर क्या हम सर्वशक्तिमान और दयालु ख़ुदा तआला की ओर ऐसी तुच्छ विशेषताएं सम्बद्ध कर सकते हैं कि हमेशा वह अपने बन्दों को दुख देकर खुश होता है परंतु कभी शाश्वत विश्राम उनको देना नहीं चाहता। पवित्र ख़ुदा के बारे में इतनी तंगदिली संबद्ध नहीं हो सकती। अफसोस ऐसे पक्षपात की शिक्षा ईसाइयों की किताबों में भी पाई जाती है। वे इस बात के समर्थक हैं कि जो व्यक्ति ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा नहीं कहेगा वह शाश्वत नर्क में पड़ेगा। मगर ख़ुदा तआला ने हमें यह शिक्षा नहीं दी बल्कि वह यह शिक्षा देता है कि काफिर एक लंबी अवधि तक दंड भोग कर अंतत: ख़ुदा तआला की दया से हिस्सा पाएंगे जैसा कि हदीस में भी है -

یاتی علی جھنم زمان لیس فیھا احدٌ و نسیم الصباتحرّك ابوابھا

अर्थात नर्क पर एक ऐसा समय आएगा कि उसमें कोई भी नहीं होगा और सुबह की हवा उसके किवाड़ हिलाएगी। इसी के अनुसार पवित्र क़ुर्आन में यह आयत है-

اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ (सूरः हूद-11/108)

अर्थात नारकी लोग नर्क में हमेशा रहेंगे लेकिन जब ख़ुदा चाहेगा तो उनको नर्क से मुक्ति देगा क्योंकि तेरा रब्ब जो चाहता है कर सकता है। यह शिक्षा ख़ुदा तआला की सिफ़ात-ए-कामिला (पूर्ण विशेषताओं) के अनुसार है क्योंकि उसकी विशेषताएं रौद्र भी हैं और सौम्य भी, और वही ज़ख्मी करता है और वही फिर मरहम

लगाता है★ और यह बात पूर्णतः अनुचित और ख़ुदा तआला की सर्वांगपूर्ण विशेषताओं के विपरीत है कि नर्क में डालने के बाद हमेशा उसकी प्रकोपीय विशेषताएं ही प्रकट होती रहें और कभी रहम और क्षमा की विशेषता जोश में न आए। और करम (कृपा) और रहम (दया) की विशेषताएं हमेशा के लिए बेकार रहें। बल्कि जो कुछ ख़ुदा तआला ने अपनी पवित्र पुस्तक में कहा है इससे ज्ञात होता है कि एक लंबी अवधि तक, जिसको मानवीय कमज़ोरी को दृष्टिगत रखते हुए रूपक के तौर पर 'शाश्वत' के नाम से नामित किया गया है, नारकी लोग नर्क में रहेंगे। और उसके बाद रहम और करम की विशेषता अपना जलवा दिखाएगी और ख़ुदा अपना हाथ नर्क में डालेगा और जितने ख़ुदा की मुट्ठी में आ जाएंगे सब नर्क से निकाले जाएंगे। अतः इस हदीस में भी अंततः सब की मुक्ति☆ की ओर संकेत है क्योंकि ख़ुदा की मुट्ठी ख़ुदा की तरह ही असीमित है जिस से कोई भी बाहर नहीं रह सकता।

याद रहे कि जिस प्रकार सितारे हमेशा समय-समय पर चमकते

★ यह बात स्वयं में अनुचित है कि मनुष्य को ऐसा शाश्वत दण्ड दिया जाए कि जैसा ख़ुदा हमेशा के लिए है ऐसा ही ख़ुदा की शाश्वतता के अनुसार नारकी हमेशा नर्क में रहें। आखिर उनके दोषों में ख़ुदा का भी हाथ है क्योंकि उसी ने ऐसी शक्तियां पैदा कीं जो कमज़ोर थीं। अतः नारकी लोगों का अधिकार है कि इस कमज़ोरी से लाभ उठाएं जो उनकी फितरत को ख़ुदा की ओर से मिली है। इसी से।

☆ मुक्ति से यह अनिवार्य नहीं कि सब लोग समान मर्तबे के हो जाएंगे बल्कि जिन लोगों ने संसार में ख़ुदा को अपनाया और ख़ुदा की मुहब्बत में खो गए और सन्मार्ग पर स्थापित हो गए उनके लिए विशेष मर्तबा है, दूसरे लोग इस मर्तबा तक नहीं पहुंच सकते। इसी से।

रहते हैं इसी प्रकार ख़ुदा की विशेषताएँ भी अपना जलवा दिखाती रहती हैं कभी इंसान ख़ुदा की सिफ़ात-ए-जलालिया (प्रतापी विशेषताओं) और उसकी व्यक्तिगत निष्पृह्यता के जलवा के अधीन होता है और कभी सिफ़ात-ए-जमालिया (सौंदर्यमय विशेषताओं) का जलवा उस पर पड़ता है। इसी की ओर संकेत है जो अल्लाह तआला फ़रमाता है-

(सूरः रहमान- 55/30) كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَأْنٍ ☆

अतः यह अत्यंत मूर्खता का विचार है कि ऐसा अनुमान किया जाए कि इसके कि बाद मुजरिम लोग नर्क में डाले जाएंगे फिर सिफ़ात-ए-करम और रहम हमेशा के लिए स्थगित हो जाएंगी और कभी उनका प्रकटन नहीं होगा। क्योंकि अल्लाह तआला की सिफ़ात का स्थगित होना असंभव है बल्कि ख़ुदा तआला की वास्तविक सिफ़त मुहब्बत और रहम है और वही समस्त सिफ़ात की मां है और वही कभी मानवीय सुधार के लिए प्रतापी और प्रकोपीय सिफ़त के रूप में जोश मारती है और जब सुधार हो जाता है तो मुहब्बत अपने रंग में प्रकट हो जाती है और फिर उपकार स्वरूप हमेशा के लिए रहती है। ख़ुदा एक चिड़चिड़े इंसान के समान नहीं है जो अकारण दंड देने का इच्छुक हो। वह किसी पर अत्याचार नहीं करता बल्कि लोग स्वयं अपने पर अत्याचार करते हैं। उसकी मुहब्बत में सर्वथा मुक्ति और उसको छोड़ने में साक्षात दंड है।

यह तो आर्य समाज वालों की ईश्वर संबंधी शिक्षा है और इस शिक्षा की दृष्टि से यह मानना पड़ता है कि हर एक जो ख़ुदा तआला के दरबार में कोई सम्मान पाता है चाहे अवतार बन जाता है

☆ हर पल वह नई शान में होता है - अनुवादक

या ऋषि बन जाता है या स्वयं ऐसा व्यक्ति जिस पर वेद उतरे हों, उसका सम्मान किसी भरोसे के योग्य नहीं होता बल्कि वह हज़ारों बार सम्मान की कुर्सी से नीचे डाल दिया जाता है। और या तो वह परमेश्वर का बड़ा प्यारा और सानिध्य प्राप्त और अवतार और ऋषि और ऐसा-ऐसा था और या फिर आवागमन के चक्कर में आकर कोई कीड़ा-मकोड़ा बन जाता है। शाश्वत मुक्ति कभी उसको नसीब नहीं होती। यहां भी मरने का भय है फिर मरने के बाद दोबारा आवागमन के अज़ाब का भय। अत: यह तो ख़ुदा तआला का सम्मान किया गया! एक ओर समस्त रूहें और कण प्राचीन और स्वयंभू होने में उसके भागीदार ठहराए गए और दूसरी ओर परमेश्वर को ऐसा कंजूस क़रार दिया गया कि बावजूद यह कि सामर्थ्य रखता है, सर्वशक्तिमान है मगर फिर भी किसी को शाश्वत मुक्ति देना नहीं चाहता।

फिर इंसानों को पवित्र होने के बारे में जो कुछ वेद ने सिखाया है उसकी समस्त वास्तविकता तो नियोग की शिक्षा से भली-भांति प्रकट होती है जिसका निष्कर्ष यह है कि आर्य अपनी विवाहिता स्त्री को औलाद की इच्छा से किसी दूसरे मर्द के साथ सहवास करा सकता है और जब तक वह औरत इस पवित्र कार्य से 11 बच्चे प्राप्त न कर ले वह उस अन्य पुरुष से प्रतिदिन सहवास रह सकती है। अब हम इस जुमला मोतरिज़ा (अतिरिक्त वाक्य) से अपने वास्तविक उद्देश्य की ओर आते हैं और वह यह कि आर्यों के सिद्धांत के अनुसार उनका परमेश्वर परोक्ष का ज्ञाता नहीं हो सकता और उनके पास परमेश्वर के परोक्ष ज्ञाता होने पर कोई दलील नहीं।

ऐसा ही ईसाई आस्था की दृष्टि से ख़ुदा तआला परोक्ष का ज्ञान

नहीं रखता है क्योंकि जिस अवस्था में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा क़रार दिया गया है और वह स्वयं इक़रार करते हैं कि मैं जो ख़ुदा का बेटा हूं मुझे क़यामत का ज्ञान नहीं। अत: इससे सिवाय इसके क्या परिणाम निकल सकता है कि ख़ुदा को क़यामत का ज्ञान नहीं कि कब आएगी।

फिर दूसरी शाख वास्तविक मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) की ख़ुदा तआला की पूर्ण क़ुदरत को पहचानना है लेकिन इस शाख में भी आर्य समाज वाले और पादरी साहिबान अपने ख़ुदा पर दाग़ लगा रहे हैं।

आर्य समाज वाले इस तरह से कि वे अपने परमेश्वर को रूहों और सांसारिक कणों के पैदा करने पर समर्थ ही नहीं समझते और न इस बात पर समर्थ समझते हैं कि उनका परमेश्वर किसी रूह को शाश्वत मुक्ति दे सके।★ ऐसा ही पादरी साहिबान भी अपने ख़ुदा

★ शुक्र करने का स्थान है कि हमारा ख़ुदा हमेशा अपने कुदरत के नमूने हमें दिखाता है ताकि हमेशा हमारा ईमान ताज़ा हो जैसा कि उसने 4 अप्रैल 1905 ई० के भूकंप से पहले 4 बार विभिन्न समयों में मुझे अपनी वह्यी के द्वारा सूचना दी कि पंजाब में एक भयंकर भूकंप आने वाला है। अत: वह भयंकर भूकंप 4 अप्रैल 1905 ई० को मंगल की सुबह आ गया और वह बसंत का मौसम था। और फिर उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने मुझे सूचना दी कि फिर बसंत के मौसम में भयंकर भूकंप आने वाले हैं। अत: 28 फरवरी 1906 ई० को बसंत के मौसम में एक भयंकर भूकंप आया और मंसूरी पहाड़ी में उसका झटका इतना महसूस हुआ कि लोग हक्के-बक्के रह गए। और उन्हीं दिनों में अमेरिका के कुछ हिस्सों में भी एक भयंकर भूकंप आया जिससे कई शहर नष्ट हो गए। अत: ख़ुदा वास्तव में वही ख़ुदा है जो अब भी अपनी वह्यी के द्वारा अपनी ज़िन्दा कुदरतें हम पर प्रकट करता है और ऐसी हज़ारों भविष्यवाणियां हैं जो ख़ुदा की वह्यी के अनुसार जो मुझ पर हुई प्रकटन में आईं। इसी से।

को समर्थ नहीं समझते क्योंकि उनका ख़ुदा अपने विरोधियों के हाथ से मारें खाता रहा, क़ैद में डाला गया, कोड़े लगे, सूली पर खींचा गया। अगर वह समर्थ होता तो इतने अपमान बावजूद ख़ुदा होने के कदापि पर न उठाता और साथ ही अगर वह समर्थ होता तो उसके लिए क्या आवश्यकता थी कि अपने बन्दों को मुक्ति देने के लिए यह उपाय सोचता कि स्वयं मर जाए और इस प्रकार बंदे रिहाई पाएं। जो व्यक्ति ख़ुदा होकर तीन दिन तक मरा रहा उसकी कुदरत का नाम लेना ही लज्जाजनक बात है। और यह विचित्र बात है कि ख़ुदा तो तीन दिन तक मरा रहा लेकिन उसके बंदे तीन दिन तक बिना ख़ुदा के ही जीते रहे।

और फिर उन लोगों की तौहीद (अर्थात एकेश्वरवाद) का यह हाल है कि आर्य समाज वाले तो कण-कण और समस्त रूहों को स्वयं ही मौजूद होने में अपने परमेश्वर के भागीदार ठहराते हैं और उनके अस्तित्व और मृत्यु को केवल उन्हीं की ताकत और शक्ति की ओर सम्बद्ध करते हैं और यह पूर्णत: शिर्क है।

रहे ईसाई तो उनका यह हाल है कि वह स्पष्ट रूप से तौहीद के विपरीत आस्था★ रखते हैं अर्थात वे तीन ख़ुदा मानते हैं अर्थात

★ वह आस्था जो क़ुर्आन ने सिखाई है यह है कि जैसा कि ख़ुदा ने रूहों को पैदा किया है ऐसा ही वह उनको मारने पर भी समर्थ है और इंसानी रूह उसके उपकार तथा कृपा से शाश्वत जीवन पाती है न अपनी व्यक्तिगत शक्ति से। यही कारण है कि जो लोग अपने ख़ुदा से पूर्ण मुहब्बत और पूर्ण आज्ञापालन करते हैं और पूरी सच्चाई और वफादारी से उसकी चौखट पर झुकते हैं उनको विशेष रूप से एक पूर्ण जीवन प्रदान किया जाता है और उनकी फितरती ज्ञानेन्द्रियों में बहुत तेज़ी प्रदान की जाती है और उनकी फितरत को एक नूर प्रदान किया जाता है जिसके कारण एक

बाप, बेटा, रूहुल क़ुदुस और यह जवाब उनका पूर्णता बकवास है कि हम तीन को एक समझते हैं। ऐसे बेहूदा उत्तर को कोई बुद्धिमान स्वीकार नहीं कर सकता जबकि यह तीनों ख़ुदा स्थाई तौर पर अलग-अलग अस्तित्व रखते हैं और अलग-अलग पूरे ख़ुदा हैं तो कौन सा हिसाब है जिसकी दृष्टि से वे एक हो सकते हैं। इस प्रकार का हिसाब किस स्कूल या कॉलेज में पढ़ाया जाता है? क्या कोई तर्क शास्त्र या दर्शन समझा सकता है ऐसे स्थाई तीन एक कैसे हो गए और अगर कहो कि यह भेद है कि जो इंसानी बुद्धि से ऊपर की बात है तो यह धोखा देना है। क्योंकि मानवीय बुद्धि खूब जानती है कि अगर तीन को तीन पूर्ण ख़ुदा कहा गया तो तीन पूर्ण को बहारहाल तीन कहना पड़ेगा न कि एक। और इस तस्लीस (तीन ख़ुदा मानना) की आस्था को न केवल क़ुर्आन शरीफ रद्द करता है बल्कि तौरात भी रद्द करती है। क्योंकि वह तौरात जो मूसा को दी गई थी उसमें इस तस्लीस का कुछ भी वर्णन नहीं, इशारा तक नहीं अन्यथा स्पष्ट है कि अगर तौरात में भी इन ख़ुदाओं के बारे में शिक्षा होती तो कदापि संभव न था कि यहूदी इस शिक्षा को भूल जाते। क्योंकि सर्वप्रथम

शेष हाशिया- विलक्षण रूहानियत उनमें जोश मारती है और समस्त रूहानी शक्तियां जो वे दुनिया में रखते थे, मौत के बाद बहुत बढ़ा दी जाती हैं और साथ ही मरने के बाद वे अपने ईश्वर प्रदत्त प्रेम के कारण जो ख़ुदा तआला से रखते हैं आसमान पर उठाए जाते हैं जिसको शरीयत की भाषा में 'रफा' (उठाया जाना) कहते हैं लेकिन जो मोमिन नहीं हैं और जो ख़ुदा तआला से पवित्र संबंध नहीं रखते यह जिंदगी उनको नहीं मिलती और न यह विशेषताएं उनको प्राप्त होती हैं। इसलिए वे लोग मुर्दा के समान होते हैं। अत: अगर ख़ुदा तआला रूहों का पैदा करने वाला न होता तो वह अपने शक्तियों से मोमिन और ग़ैर मोमिन में यह फर्क न दिखा सकता। इसी से।

तो यहूदियों को तौहीद (एकेश्वरवाद) की शिक्षा याद रखने के लिए सख्त चेतावनी दी गई थी यहां तक कि आदेश था कि हर एक यहूदी इस शिक्षा को याद कर ले और अपने घर की चौखटों पर उसको लिख छोड़ें और अपने बच्चों को सिखा दें। और फिर इसके अतिरिक्त इसी तौहीद की शिक्षा के याद कराने के लिए निरंतर ख़ुदा तआला के नबी यहूदियों में आते रहे और वही शिक्षा सिखाते रहे। अत: यह बात पूर्णत: असंभव था कि यहूदी लोग बावजूद इतनी चेतावनी और निरंतर नबियों के तस्लीस की शिक्षा को भूल जाते और बजाय इसके तौहीद की शिक्षा अपनी किताबों में लिख देते और वही बच्चों को सिखाते और आने वाले सैकड़ों नबी भी इसी तौहीद की शिक्षा को दोबारा ताज़ा करते, ऐसा विचार तो बुद्धि एवं अनुमान के पूर्णत: विपरीत है। मैंने इस बारे में स्वयं प्रयत्न करके कुछ यहूदियों से सौगंध खिलाकर पूछा था कि तौरात में ख़ुदा तआला के बारे में आप लोगों को क्या शिक्षा दी गई थी? क्या तस्लीस की शिक्षा दी गई थी या कोई और? तो उन यहूदियों ने मुझे पत्र लिखे जो अब तक मेरे पास मौजूद हैं और उन पत्रों में बयान किया कि तौरात में तस्लीस की शिक्षा का नामोनिशान नहीं बल्कि ख़ुदा तआला के बारे में तौरात की वही शिक्षा है जो क़ुर्आन की शिक्षा है। अत: अफसोस है ऐसी क़ौम पर जो ऐसी आस्था पर अड़ी बैठी है कि न तो वह शिक्षा तौरात में मौजूद है और न क़ुर्आन शरीफ में है बल्कि सच तो यह है कि तस्लीस की शिक्षा इंजील में भी मौजूद नहीं। इंजील में भी जहां-जहां शिक्षा का वर्णन है उन समस्त स्थानों पर तस्लीस के बारे में इशारा तक नहीं बल्कि एक ख़ुदा की शिक्षा देती है। अत: बड़े-बड़े विरोधी पादरियों को यह बात

माननी पड़ी है कि इंजील में तस्लीस की शिक्षा नहीं। अब यह प्रश्न होगा कि ईसाई धर्म में तस्लीस कहां से आई? इसका उत्तर ईसाइयों अन्वेषकों ने यह दिया है कि यह तस्लीस यूनानी आस्था से ली गई है। यूनानी लोग तीन देवताओं को मानते थे जिस प्रकार हिंदू त्रिमूर्ति के मानने वाले हैं और जब पौलूस ने यूनानियों की ओर ध्यान दिया और क्योंकि वह चाहता था कि किसी प्रकार यूनानियों को ईसाई धर्म में सम्मिलित करे, इसलिए उसने यूनानियों को खुश करने के लिए बजाय तीन देवताओं के तीन उक्नूम इस धर्म में सम्मिलित कर दिए अन्यथा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बला को भी मालूम न था कि उक्नूम किस चीज़ का नाम है। उनकी शिक्षा ख़ुदा तआला के बारे में समस्त नबियों की तरह एक सामान्य शिक्षा थी कि ख़ुदा '**एक**' है। अत: याद रखना चाहिए कि यह धर्म जो ईसाई धर्म के नाम से प्रसिद्ध किया जाता है वास्तव में पौलूसी धर्म है न कि मसीही। क्योंकि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने किसी स्थान पर तस्लीस की शिक्षा नहीं दी और वह जब तक जीवित रहे एक ख़ुदा की शिक्षा देते रहे और उनके देहांत के बाद उनका भाई याक़ूब भी जो उनका जानशीन था और एक बुज़ुर्ग इंसान था, तौहीद (एकेश्वरवाद) की शिक्षा देता रहा। और पौलुस ने अकारण उस बुज़ुर्ग का विरोध शुरू कर दिया और उसकी सही आस्था के विपरीत शिक्षा देना शुरू किया और अंतत: पौलुस अपने विचारों में यहां तक बढ़ गया कि एक नया धर्म स्थापित किया और तौरात के अनुसरण से अपनी जमात को पूर्णत: अलग कर दिया। और शिक्षा दी कि मसीही धर्म में मसीह के कफ्फारा के बाद शरीयत की आवश्यकता नहीं और मसीह का खून

गुनाहों के दूर करने के लिए पर्याप्त है। तौरात का अनुसरण आवश्यक नहीं और फिर एक और गंद इस धर्म में डाल दिया कि उनके लिए सूअर खाना हलाल कर दिया। हालांकि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम इंजील में सूअर को अपवित्र क़रार देते हैं तभी तो इंजील में उनका कथन है कि अपने मोती सूअरों के आगे मत फेंको। अत: जब कि पवित्र शिक्षा का नाम हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने मोती रखा है तो इस मुक़ाबले से स्पष्ट ज्ञात होता है कि अपवित्र का नाम उन्होंने सूअर रखा है। असल बात यह है कि यूनानी सूअर को खाया करते थे जैसा कि आजकल समस्त यूरोप के लोग सूअर खाते हैं। इसलिए पौलूस ने यूनानियों के दिलों को जोड़ने के लिए सूअर भी अपनी जमाअत के लिए हलाल कर दिया। हालांकि तौरात में लिखा है कि वह शाश्वत हराम है और उसका छूना भी अवैध है। अत: इस धर्म में समस्त ख़राबियां पौलूस से पैदा हुईं। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम तो वह बेनफ़्स इंसान थे जिन्होंने यह भी न चाहा कि कोई उनको नेक इंसान कहे, परंतु पौलूस ने उनको ख़ुदा बना दिया। जैसा कि इंजील में लिखा है कि किसी ने हज़रत मसीह को कहा कि हे नेक उस्ताद! उन्होंने उसको कहा कि तू मुझे क्यों नेक कहता है? उनका वह वाक्य जो सूली पर चढ़ाए जाने के समय उनके मुंह से निकला कैसा एकेश्वरवाद पर दलालत करता है कि उन्होंने अत्यंत विनम्रता से कहा 'एली एली लिमा सबक़तानी' अर्थात हे मेरे ख़ुदा हे मेरे ख़ुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? क्या जो व्यक्ति इस विनम्रता से ख़ुदा को पुकारता है और इक़रार करता है कि ख़ुदा मेरा रब है उसके बारे में कोई बुद्धिमान अनुमान कर सकता है कि उसने वास्तव में ख़ुदाई का

दावा किया था? असल बात यह है कि जिन लोगों को ख़ुदा तआला से व्यक्तिगत मुहब्बत का संबंध होता है कभी-कभी रूपक के तौर पर ख़ुदा तआला उन के मुख से ऐसे शब्द उनके बारे में कहला देता है कि अज्ञानी लोग उनके इन शब्दों से ख़ुदाई सिद्ध करना चाहते हैं। अत: मेरे बारे में मसीह अलैहिस्सलाम से भी अधिक वे शब्द कहे गए हैं★ जैसा कि अल्लाह तआला मुझे संबोधित करके कहता है-

یا قمرُ یا شمسُ انت منّی و انا منك

अर्थात हे चंद्र! और हे सूर्य! तू मुझसे है और मैं तुझसे। अब इस वाक्य को जो व्यक्ति चाहे किसी ओर खींच ले परंतु वास्तविक अर्थ इसके ये हैं कि सर्वप्रथम ख़ुदा ने मुझे चंद्र बनाया क्योंकि मैं चंद्र की तरह उस वास्तविक सूर्य से ज़ाहिर हुआ और फिर स्वयं चंद्र

★ एक बार कश्फ़ (तन्द्रावस्था) में मैंने देखा कि मैंने नई धरती और नया आकाश पैदा किया और फिर मैंने कहा कि आओ अब इंसान को पैदा करें। इस पर अज्ञानी मौलवियों ने शोर मचाया कि देखो अब इस व्यक्ति ने ख़ुदाई का दावा किया। हालांकि उस कश्फ़ का यह अर्थ था कि ख़ुदा मेरे हाथ पर एक ऐसा परिवर्तन उत्पन्न करेगा कि मानो आकाश और धरती नए हो जाएंगे और वास्तविक इंसान पैदा होंगे। इसी तरह एक बार मुझे ख़ुदा ने संबोधित करके कहा-

انت منّی بمنزلة اولادی۔ انت منّی بمنزلةٍ لا یعلمها الخلق

अर्थात तू मेरी औलाद के समान है और तुझे मुझसे वह संबंध है जिसको संसार नहीं जानता। तब मौलवियों ने अपने कपड़े फाड़े कि अब कुफ्र में क्या संदेह रहा और इस आयत को भूल गए-

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ (अल बक़र: - 2/201)

(अर्थात- अल्लाह को याद करो जिस प्रकार तुम अपने बाप दादा को याद करते हो- अनुवादक)

बना क्योंकि मेरे द्वारा उसके प्रताप की रोशनी प्रकट हुई और होगी। याकूब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का भाई जो मरियम का बेटा था, वह वास्तव में एक नेक आदमी था। वह तमाम बातों में तौरात का पालन करता था और ख़ुदा को 'एक' मानता था और सूअर को हराम समझता था और यहूदियों की तरह बैतुल मुक़द्दस की ओर नमाज़ पढ़ता था और जैसा कि चाहिए था वह स्वयं को एक यहूदी समझता था। केवल यह था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत पर ईमान रखता था लेकिन पौलूस ने बैतुल मुक़द्दस से भी नफरत दिलाई। अंततः ख़ुदा तआला के स्वाभिमान ने उसको पकड़ा और एक बादशाह ने उसको सूली पर चढ़ा दिया और इस प्रकार उसका अंत हुआ। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क्योंकि सच्चे और ख़ुदा तआला की ओर से थे इसलिए वे सूली से मुक्ति पा गए और ख़ुदा तआला ने उनको सूली से ज़िन्दा बचा लिया। लेकिन क्योंकि पौलूस ने सच्चाई को छोड़ दिया था इसलिए वह सूली पर लटकाया गया।

याद रहे कि पौलूस हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन में आपका जानी दुश्मन था और फिर आपकी मृत्यु के बाद जैसा कि यहूदियों के इतिहास में लिखा है उसके ईसाई होने का कारण उसके अपने कुछ व्यक्तिगत उद्देश्य थे जो यहूदी होने से पूरे न हो सके। इसलिए वह उनको बिगाड़ने के लिए ईसाई हो गया और ज़ाहिर किया कि मुझे कश्फ़ के तौर पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मिले हैं और मैं उन पर ईमान लाया हूं। और उसने सबसे पहले तस्लीस (अर्थात तीन ख़ुदाओं की आस्था) का ख़राब पौधा दमिश्क में लगाया और यह पौलूसी तस्लीस दमिश्क से ही शुरू हुई। इसी की ओर हदीस नबवी में इशारा करके कहा

गया है कि आने वाला मसीह दमिश्क★ के पूर्वी दिशा में अवतरित होगा अर्थात उसके आने पर तस्लीस का अंत होगा और मानवीय दिल तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर प्रेरित होते जाएंगे और पूर्वी ओर से मसीह का अवतरित होना उसके प्रभुत्व की ओर इशारा है क्योंकि प्रकाश जब प्रकट होता है तो अंधकार पर विजयी हो जाता है।

साफ ज़ाहिर है कि अगर पौलूस हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद एक रसूल के रंग में प्रकट होने वाला था जैसा कि समझा गया है तो जरूर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम उसके बारे में कुछ ख़बर देते। विशेषकर इस कारण तो ख़बर देना अत्यंत आवश्यक था कि जब कि पौलूस हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन के समस्त ज़माने में हज़रत ईसा से अत्यंत विमुख रहा और उनके दुख देने के लिए तरह तरह के षड्यंत्र करता रहा। तो ऐसा व्यक्ति उनकी मृत्यु के बाद क्योंकर सच्चा समझा जा सकता है, सिवाय इसके कि स्वयं हज़रत मसीह की ओर से उसके बारे में स्पष्ट भविष्यवाणी पाई जाए और उसमें स्पष्ट तौर पर लिखा हो कि यद्यपि पौलूस मेरे जीवन में मेरा अत्यंत विरोधी रहा है और मुझे कष्ट देता रहा है परंतु मेरे बाद वह ख़ुदा तआला का रसूल और अत्यंत पवित्र आदमी हो जाएगा, विशेष रूप से जबकि पौलूस ऐसा आदमी था कि उसने मूसा अलैहिस्सलाम की तौरात के विरुद्ध अपनी ओर से नई शिक्षा दी। सूअर (का मांस खाना) हलाल किया, ख़त्ना की रस्म तो तौरात में एक सुदृढ़ रस्म थी

★ याद रहे कि क़ादियान जो मेरा निवास स्थान है, दमिश्क से बिल्कुल पूर्वी दिशा में है, अत: आज वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने की थी। इसी से

और समस्त नबियों का ख़त्ना हुआ था और स्वयं हज़रत मसीह का भी ख़त्ना हुआ था।★ ख़ुदा का वह प्राचीन आदेश खण्डित कर दिया तथा तौरात के इकेश्वरवाद के स्थान पर तस्लीस क़ायम कर दी और तौरात के आदेशों का पालन करना अनावश्यक ठहराया और बैतुल मुक़द्दस से भी मुंह फेर लिया, तो ऐसे आदमी के बारे में जिसने मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत को तहस-नहस कर दिया, अवश्य कोई भविष्यवाणी होनी चाहिए थी। अत: जब कि इंजील में पौलूस के

★ इस विषय में पवित्र बाइबल के निम्नलिखित कथन दर्शनीय हैं:-

⁂ मेरे साथ बान्धी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात तेरे वंश को पालनी पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक पुरूष का खतना हो।

⁂ तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना करा लेना; जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा।

⁂ पीढ़ी-पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हों, वा परदेशियों को रुपा देकर मोल लिये जाए, ऐसे सब पुरूष भी जब आठ दिन के हो जाए, तब उनका खतना किया जाए।

⁂ जो तेरे घर में उत्पन्न हो, अथवा तेरे रुपे से मोल लिया जाए, उसका खतना अवश्य ही किया जाए; सो मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग-युग रहेगी।

⁂ जो पुरूष खतनारहित रहे, अर्थात जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह प्राणी अपने लोगों मे से नाश किया जाए, क्योंकि उसने मेरे साथ बान्धी हुई वाचा को तोड़ दिया। (**उत्पत्ति**-17:10-14)

⁂ और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। (**लैव्यव्यवस्था**-12:3)

⁂ और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उसका नाम उसके पिता के नाम पर जकरयाह रखने लगे।

⁂ और उस की माता ने उत्तर दिया कि नहीं; वरन उसका नाम यूहन्ना रखा जाए। (**लूक़ा**-1:59-60) **(प्रकाशक)**

रसूल होने के बारे में ख़बर नहीं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से उसकी शत्रुता सिद्ध, और तौरात के शाश्वत आदेशों का वह विरोधी, तो उसको क्यों अपना धार्मिक पेशवा बनाया गया। क्या इस पर कोई दलील है??

फिर मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) के बाद बड़ी आवश्यक चीज़ ख़ुदा की मुहब्बत है। यह बात अत्यंत स्पष्ट और खुली खुली है कि कोई व्यक्ति अपने मुहब्बत करने वाले को दण्ड देना नहीं चाहता बल्कि मुहब्बत, मुहब्बत को खींचती है और अपनी ओर आकर्षित करती है। जिस व्यक्ति से कोई सच्चे दिल से मुहब्बत करता है उसको विश्वास करना चाहिए कि वह दूसरा व्यक्ति भी, जिससे मुहब्बत की गई है उससे दुश्मनी नहीं कर सकता। बल्कि अगर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को जिससे वह अपने दिल से मुहब्बत रखता है अपनी उस मुहब्बत से सूचना न भी दे तब भी इतना प्रभाव तो अवश्य होता है कि वह व्यक्ति उससे शत्रुता नहीं कर सकता। इसी आधार पर कहा गया है कि दिल को दिल से संबंध होता है और ख़ुदा के नबियों और रसूलों में जो एक आकर्षण शक्ति और कशिश पाई जाती है और हज़ारों लोग उनकी ओर खींचे जाते हैं और उनसे मुहब्बत करते हैं यहां तक कि अपनी जान भी उन पर फिदा करना चाहते हैं, इसका कारण यही है कि मानवजाति की भलाई और हमदर्दी उनके दिल में होती है। यहां तक कि वे मां से भी अधिक इंसानों से प्यार करते हैं और स्वयं को दुख और दर्द में डालकर भी उनके आराम के इच्छुक होते हैं। अंततः उनका सच्चा आकर्षण नेक दिलों को अपनी ओर खींचना शुरू कर देता है। फिर जबकि इंसान बावजूद इसके कि वह

परोक्ष का ज्ञाता नहीं दूसरे व्यक्ति की छुपी हुई मुहब्बत पर सूचना पा लेता है तो फिर क्योंकर ख़ुदा तआला जो परोक्ष का ज्ञाता है किसी की निष्कपट मुहब्बत से अपरिचित रह सकता है? मुहब्बत विचित्र चीज़ है उसकी आग गुनाहों की आग को जलाती और पाप के शोलों को भस्म कर देती है। सच्ची और व्यक्तिगत और पूर्ण मुहब्बत के साथ अज़ाब इकट्ठा हो ही नहीं सकता। और सच्ची मुहब्बत की निशानियों में से एक यह भी है कि उसकी फितरत में यह बात रची-बसी होती है कि अपने महबूब से संबंध टूटने का उसे अत्यंत भय होता है और एक छोटी से छोटी ग़लती के साथ स्वयं को बर्बाद समझता है और अपने महबूब के विरोध को अपने लिए एक ज़हर समझता है। और यह कि अपने महबूब की मुलाकात के लिए बहुत ही बेताब रहता है और दूरी और जुदाई के सदमा से ऐसा टूट जाता है कि बस मर ही जाता है। इसलिए वह केवल उन बातों को पाप नहीं समझता कि जो सामान्य लोग समझते हैं कि क़त्ल न कर, खून न कर, व्यभिचार न कर, चोरी न कर, झूठी गवाही न दे बल्कि वह एक छोटी सी लापरवाही को और थोड़ी सी मुहब्बत को जो ख़ुदा को छोड़कर किसी अन्य से की जाए एक बड़ा गुनाह समझता है। इसलिए अपने शाश्वत महबूब के दरबार में हमेशा इस्तिग़फ़ार (अर्थात क्षमा याचना) करता रहता है और चूंकि इस बात पर उसकी फितरत राज़ी नहीं होती कि वह किसी समय भी ख़ुदा तआला से अलग रहे इसलिए मनुष्य होने के कारण थोड़ी सी भी लापरवाही अगर उससे हो तो उसको एक पहाड़ जैसा गुनाह समझता है। यही भेद है कि ख़ुदा तआला से पवित्र और पूर्ण संबंध रखने वाले हमेशा इस्तिग़फ़ार

में व्यस्त रहते हैं क्योंकि यह मुहब्बत की मांग है कि एक सच्चे प्रेमी को हमेशा यह चिंता लगी रहती है कि उसका महबूब उस से नाराज़ न हो जाए और चूंकि उसके दिल में एक प्यास लगा दी जाती है कि ख़ुदा पूरी तरह उससे राज़ी हो इसलिए अगर ख़ुदा तआला यह भी कहे कि मैं तुझसे राज़ी हूं तब भी वह इतने पर सब्र नहीं कर सकता क्योंकि जैसा कि शराब के पीने के समय एक शराबी हरदम एक बार पी कर फिर दूसरी बार मांगता है, इसी तरह जब इंसान के अंदर मुहब्बत का चश्मा जोश मारता है तो वह मुहब्बत स्वभाविक रूप से यह मांग करती है कि अधिक से अधिक ख़ुदा तआला की रज़ामन्दी प्राप्त हो। अत: मुहब्बत की अधिकता के कारण इस्तिग़फ़ार की भी अधिकता होती है। यही कारण है कि ख़ुदा से पूरे तौर पर प्यार करने वाले हरदम और हर पल इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। ओर सबसे बढ़ कर मासूम की यही निशानी है कि वह सबसे अधिक इस्तिग़फ़ार में लगा रहे और इस्तिग़फ़ार के वास्तविक अर्थ ये हैं कि प्रत्येक भूल चूक और ग़लती जो मानवीय कमज़ोरी के कारण मनुष्य से हो सकती है, इस अनुमानित कमज़ोरी को दूर करने के लिए ख़ुदा से सहायता मांगी जाए ताकि ख़ुदा के फजल से वह कमज़ोरी प्रकट न हो और छुपी रहे। फिर इसके बाद इस्तिग़फ़ार के अर्थ आम लोगों के लिए व्यापक किए गए और यह बात भी इस्तिग़फ़ार में सम्मिलित हुई कि जो कुछ भूल चूक और ग़लती हो चुकी, ख़ुदा तआला उसके बुरे परिणाम और ज़हरीले प्रभाव से दुनिया और परलोक में सुरक्षित रखे। अत: वास्तविक मुक्ति का स्रोत ख़ुदा तआला की व्यक्तिगत मुहब्बत है जो विनम्रता और निरन्तर इस्तिग़फ़ार के द्वारा ख़ुदा तआला की

मुहब्बत को अपनी ओर खींचती है और जब इंसान अपनी मुहब्बत को चरम सीमा तक पहुंचाता है और मुहब्बत की आग से अपनी तामसिक इच्छाओं को जला देता है तब यकायक एक शोले के समान ख़ुदा तआला की मुहब्बत जो ख़ुदा तआला उससे करता है, उसके दिल पर गिरती है और उसको दूषित जीवन की गंदगी से बाहर ले आती है और हय्यो कय्यूम ख़ुदा की पवित्रता का रंग उसके ऊपर चढ़ जाता है बल्कि अल्लाह तआला की समस्त विशेषताओं से प्रतिरूपी तौर पर उसको हिस्सा मिलता है। तब वह ख़ुदाई चमकारों का दिखाने वाला हो जाता है और जो कुछ प्रतिपालक ख़ुदा के अनादि खज़ानों में छुपा है उसके द्वारा वे भेद संसार में प्रकट होते हैं क्योंकि वह ख़ुदा जिसने इस संसार को पैदा किया कंजूस नहीं है बल्कि उसके वरदान शाश्वत हैं और उसके नाम और उसकी विशेषताएं कभी नष्ट नहीं हो सकतीं। इसलिए वह संयम और परिश्रम की शर्त के साथ जो कुछ पहलों को दिया है वह बाद वालों को भी देता है जैसा कि स्वयं उसने क़ुर्आन शरीफ में यह दुआ सिखाई है-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۬ۙ

(अल फातिहा 1/6,7)

अर्थात है हमारे ख़ुदा हमें वह सीधा मार्ग दिखला जो उन लोगों का मार्ग है जिन पर तेरी कृपा और उपकार हुआ। इस आयत के यह अर्थ हैं कि वही कृपा और उपकार जो समस्त नबियों और सिद्दीकों पर पहले हो चुका है वह हम पर भी कर और किसी कृपा से हमें वंचित न रख। यह आयत इस उम्मत (अर्थात मुसलमानों) को इतनी महान आशा दिलाती है जिसमें गुज़री हुई उम्मतें सम्मिलित नहीं हैं

क्योंकि समस्त नबियों के विभिन्न कमालात और विभिन्न रूप से उन पर कृपा और उपकार हुआ। अब इस उम्मत को यह दुआ सिखाई गई कि उन समस्त विभिन्न कमालात को मुझ से मांगो। अत: स्पष्ट है कि जब विभिन्न कमालात एक स्थान पर इकट्ठे हो जाएंगे तो वह संग्रह, विभिन्न की अपेक्षा बहुत बढ़ जाएगा। इसी आधार पर कहा गया है कि- كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ (आले इमरान-3/111) अर्थात तुम अपने कमाल की दृष्टि से सब उम्मतों से श्रेष्ठ हो।

अब यह भी जानना चाहिए कि यह विभिन्न कमालात इस उम्मत में इकट्ठे करने का क्यों वादा दिया गया? इसमें भेद यह है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विभिन्न कमालात का संग्रह हैं, जैसा कि क़ुर्आन शरीफ में अल्लाह तआला फ़रमाता है - فَبِهُدٰهُمُ اقْتَدِهْ (अल अन्आम- 6/91) अर्थात समस्त नबियों को जो हिदायतें मिली थीं उन सब का अनुसरण कर। अत: स्पष्ट है कि जो व्यक्ति उन समस्त विभिन्न हिदायतों को अपने अंदर इकट्ठा करेगा उसका अस्तित्व एक संग्रहीत: अस्तित्व हो जाएगा और वह समस्त नबियों से श्रेष्ठ होगा। फिर जो व्यक्ति उस समस्त कमालात के संग्रहीत: (अर्थात हज़रत मुहम्मद स०अ०व०) का अनुसरण करेगा निश्चित है कि प्रतिरूपी तौर पर वह भी समस्त कमालात का संग्रहीत: हो। अत: इस दुआ के सिखाने में जो सूरह फातिहा में है यही भेद है कि ताकि उम्मत के कामिलीन (सिद्ध लोग) जो समस्त कमालात के संग्रहीत: के अनुसरणकर्ता हैं, वे भी समस्त कमालात के संग्रहीत: हो जाएं। अत: अफसोस उन लोगों पर जो इस उम्मत को एक मुर्दा उम्मत समझते हैं और ख़ुदा तो कमालात का संग्रहीत: होने के लिए उनको

दुआ सिखाता है परंतु वे केवल मुर्दा रहना चाहते हैं। उनके निकट यह बड़े गुनाह की बात है कि उदाहरणतया कोई यह दावा करे कि मुझ पर मसीह इब्न मरियम की तरह वह्यी उतरती है।★ उनके निकट ऐसा व्यक्ति काफिर है क्योंकि क़यामत तक ख़ुदा के इल्हाम और कलाम का दरवाज़ा बंद है। आश्चर्य कि ये लोग इतना तो मानते हैं कि अब भी ख़ुदा तआला सुनता है जैसा कि पहले सुनता था मगर यह नहीं मानते कि अब भी वह बोलता है जैसा कि पहले बोलता था, हालांकि अगर वह इस ज़माने में बोलता नहीं तो फिर सुनने पर

★ये लोग जो मौलवी कहलाते हैं हमारे सैय्यद व मौला खैरुर्रुसुल व अफज़लुल अंबिया आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान करते हैं जब कि कहते हैं कि इस उम्मत में ईसा इब्ने मरियम का समरूप कोई नहीं आ सकता था। इसलिए ख़त्मे नबुव्वत की मोहर को तोड़कर उसी इसराइली ईसा को किसी समय ख़ुदा तआला दोबारा दुनिया में लाएगा। और इस आस्था से केवल एक गुनाह नहीं बल्कि दो गुनाहों के पात्र होते हैं। (1) प्रथम यह कि उनको यह आस्था रखनी पड़ती है कि जैसा कि एक ख़ुदा का बंदा ईसा अलैहिस्सलाम नाम जिसको इब्रानी में यशु कहते हैं 30 वर्ष तक अल्लाह के रसूल मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत का अनुसरण करके ख़ुदा का सानिध्य प्राप्त करने वाला बना और नबुव्वत का मर्तबा पाया, उसके मुक़ाबले पर अगर कोई व्यक्ति बजाय 30 वर्ष के 50 वर्ष भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण करे तब भी वह मर्तबा नहीं पा सकता। मानो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण कोई कमाल प्रदान नहीं कर सकता। और नहीं सोचते कि इस अवस्था में अनिवार्य होता है कि ख़ुदा का यह दुआ सिखाना कि- (अल फ़ातिहा- 1/7) صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

एक धोखा देना है। और उनकी आस्था है कि अपने दोबारा आने की दृष्टि से ख़ातमुल अंबिया ईसा अलैहिस्सलाम ही है और वही अंतिम निर्णायक

भी कोई दलील नहीं। ख़ुदा तआला की विशेषताओं को स्थगित करने वाले अत्यंत दुर्भाग्यशाली लोग हैं। और वास्तव में यह लोग इस्लाम के शत्रु हैं। ख़त्मे नबुव्वत के ऐसे अर्थ करते हैं जिससे नबूववत ही झूठी होती है। क्या हम ख़त्मे नबुव्वत के यह अर्थ कर सकते हैं कि वे समस्त बरकतें जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से मिलनी चाहिए थीं वे सब बंद हो गईं और अब ख़ुदा तआला के इल्हाम और कलाम की इच्छा करना व्यर्थ है? लानतुल्लाहे अलल काज़िबीन। क्या ये लोग बता सकते हैं कि इस अवस्था में आंहज़रत

शेष हाशिया- और फैसला करने वाला है, और नहीं समझते कि इस भविष्यवाणी से ख़ुदा का तो यह उद्देश्य था कि जैसा कि इसी उम्मत में यहूदियों के समरूप पैदा होंगे ऐसा ही इसी उम्मत में से ईसा का समरूप भी पैदा करे। जो एक दृष्टि से उम्मती हो और एक दृष्टि से नबी हो। ईसा बिन मरियम तो उन दोनों नामों का संग्रहीत: नहीं हो सकता क्योंकि उम्मती वह होता है जो केवल अनुकरणीय नबी के अनुकरण से कमाल पाए परंतु ईसा तो पहले कमाल पा चुका। (2) और दूसरा गुनाह उन लोगों का यह है कि क़ुर्आन शरीफ की स्पष्ट आयत के विपरीत हज़रत ईसा को जीवित समझते हैं। क़ुर्आन शरीफ में स्पष्ट मौजूद है - (अलमाइदा- 5/118) فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ

और इस आयत के अर्थ ये लोग यह करते हैं कि जब कि तूने पार्थिव शरीर के साथ मुझको आसमान पर उठा लिया। यह विचित्र शब्दकोश है जो हज़रत ईसा से ही विशिष्ट है। अफसोस इतना भी नहीं सोचते कि जैसा कि क़ुर्आन शरीफ में स्पष्ट है यह सवाल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से क़यामत के दिन होगा। अत: इन अर्थों से जो शब्द 'मुतवफ़्फ़ीका' के किए जाते हैं अनिवार्य है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तो मरने से पहले ही क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने हाज़िर हो जाएंगे। और यदि कहो कि आयत 'फलम्मा तवफ्फयतनी' के यह अर्थ हैं कि जब कि तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर मुझको क्या ख़बर थी कि मेरे मरने

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण का क्या लाभ हुआ? जिन लोगों के हाथ में सिवाय पुराने किस्सों के और कुछ नहीं उनका धर्म मुर्दा है और ख़ुदा की पहचान का उन पर दरवाज़ा बंद है परंतु इस्लाम धर्म जीवित है और ख़ुदा तआला क़ुर्आन शरीफ में मुसलमानों को सूरह फातिहा में पहले नबियों का वारिस ठहराता है और दुआ सिखाता है कि जो पहले नबियों को नेमतें दी गई थीं वह मांगें, परंतु जिसके हाथ में सिर्फ किस्से हैं वह क्योंकर वारिस कहला सकता है। अफसोस इन लोगों पर! कि इन लोगों के आगे सम्पूर्ण बरकतों का

शेष हाशिया- के बाद मेरी उम्मत ने क्या किया, तो यह अर्थ भी उनकी आस्था की दृष्टि से ग़लत ठहरते हैं और दोनों अर्थों की दृष्टि से ख़ुदा तआला ईसा अलैहिस्सलाम को ऐसी झूठी आपत्ति का यह उत्तर दे सकता है कि तू मेरे सामने झूठ क्यों बोलता है कि मुझे कुछ भी ख़बर नहीं, क्योंकि तू तो दोबारा संसार में गया था और दुनिया में 40 वर्ष तक रहा था और नसारा अर्थात ईसाइयों से लड़ाइयां की थीं और सलीब को तोड़ा था। इसके अतिरिक्त इन अर्थों की दृष्टि से यह अनिवार्य ठहरता है कि जब तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित रहे ईसाई नहीं बिगड़े बल्कि उनकी मौत के बाद बिगड़े। अत: इससे तो उन लोगों को मानना पड़ता है कि ईसाई अब तक सच्चाई पर हैं। क्योंकि अब तक हज़रत ईसा आसमान पर जीवित मौजूद हैं। अफसोस! लज्जा से मर जाओ! और अंतत: याद रहे कि अगर एक उम्मती को जो केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से वह्यी और इल्हाम और नबुव्वत का दर्जा पाता है, नबी के नाम का सम्मान दिया जाए तो उससे नबुव्वत की मोहर नहीं टूटती क्योंकि वह उम्मती है और उसका अपना वजूद कुछ चीज़ नहीं और उसका कमाल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कमाल है। और वह केवल नबी नहीं कहला सकता बल्कि नबी भी और उम्मती भी। परंतु किसी ऐसे नबी का दोबारा आना जो उम्मती नहीं है ख़त्मे नबुव्वत के विपरीत है। इसी से

चश्मा खोला गया मगर ये नहीं चाहते कि एक घूंट भी उसमें से पिएं।

अब हम फिर पहली बात की तरफ लौट कर लिखते हैं कि मुक्ति का स्रोत जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं मुहब्बत और ख़ुदा की पहचान है। और ख़ुदा की पहचान एक ऐसी चीज़ है कि जितनी पहचान अधिक होती है उतनी मुहब्बत भी अधिक होती है। क्योंकि मुहब्बत के जोश मारने का कारण सौंदर्य और उपकार है। यह दोनों चीज़ें हैं जिनके कारण मुहब्बत जोश मारती है। अत: जब कि इंसान को ख़ुदा तआला के सौंदर्य और उपकार का ज्ञान होता है और वह इस बात का अनुभव कर लेता है कि वह हमारा ख़ुदा अपनी असीमित व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण कैसा सुंदर है और फिर किस प्रकार उसके असीमित उपकार हमको घेरे हुए हैं तो उस ज्ञान के बाद स्वभाविक तौर पर इंसान की वह मुहब्बत जो अनादि से उसके स्वभाव में रखी है, जोश मारती है। और जैसा कि ख़ुदा तआला सबसे अधिक सुंदर और विशेषताओं से युक्त और निरंतर उपकार करने वाला और अध्यात्म लाभ के गुणों से युक्त है ऐसा ही बंदा जो उसका इच्छुक है इन विशेषताओं की पहचान के बाद उससे ऐसी मुहब्बत करता है★ कि किसी को उसके बराबर नहीं समझता

★ जैसा कि हम बार-बार लिख चुके हैं ख़ुदा तआला की पूर्ण पहचान, उस की वह्यी और मुकालमा-मुखातिबा के बिना तथा ऐसे महान चमत्कारों के बिना जो ख़ुदाई वह्यी के द्वारा प्रकट हों और ख़ुदा तआला की उस क़ुदरत पर दलालत करें जो उसकी ख़ुदाई और प्रताप का खुला खुला निशान हों, हासिल नहीं हो सकती। वही मारिफत (अर्थात ख़ुदा की पहचान) जिसके लिए सत्य के अभिलाषी भूखे और प्यासे होते हैं, वही मारिफ़त है जिसके पाने के बिना वे मर ही जाते हैं। अत: क्या वह मारिफत इस्लाम में मौजूद नहीं और क्या इस्लाम एक सूखा और मुर्दा धर्म है?

तब न केवल जबान से बल्कि क्रियात्मक रूप से वह उसको 'एक' और भागीदार रहित जानता है और उसकी विशेषताओं और शिष्टाचार का आशिक हो जाता है और यद्यपि मुहब्बत का बीज अनादि से इंसान की बनावट में रखा गया था परंतु उस बीज की सिंचाई मारिफत ही करती है क्योंकि कोई महबूब सिवाए मारिफत के और सिवाए हुस्न के जलवों और सौन्दर्य और शिष्टाचार और मुलाकात के किसी आशिक को अपनी ओर खींच नहीं सकता। और जब पूर्ण मारिफत प्राप्त हो जाती है तभी वह समय आता है कि ख़ुदा की मुहब्बत का एक चमकता हुआ शोला इंसान के दिल पर गिरता है और यकायक उसको ख़ुदा तआला की ओर खींच लेता है। तब इंसान की रूह ख़ुदा तआला के समक्ष आशिकाना विनम्रता के साथ गिरती है और ख़ुदा तआला के असीमित समुद्र में गोता लगाकर ऐसी पवित्र और स्वच्छ हो जाती है कि समस्त तुच्छ मलिनताएं दूर हो जाती हैं और एक आध्यात्मिक परिवर्तन उसके अंदर पैदा हो जाता है। तब वह रूह अपवित्र बातों से ऐसी घृणा करती है जैसा कि ख़ुदा तआला को घृणा है और ख़ुदा की इच्छा उसकी इच्छा हो जाती है और ख़ुदा की खुशी उसकी खुशी हो जाती है। परंतु जैसा कि हम अभी लिख चुके हैं इस

शेष हाशिया- 'झूठों पर अल्लाह की लानत हो' बल्कि इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो जीवित है और अपने अनुयायियों को जीवन प्रदान करता है। वही है जो इसी संसार में हमें ख़ुदा दिखा देता है। उसकी बरकत से हम ख़ुदा की वह्यी पाते हैं और उसकी बरकत से बड़े-बड़े निशान हमसे प्रकट होते हैं। दुनिया के समस्त धर्म मर गए उनमें कुछ भी बरकत और प्रकाश नहीं। उनके द्वारा हम ख़ुदा के साथ वार्तालाप नहीं कर सकते। उनके (अनुसरण) द्वारा हम ख़ुदा के विलक्षण काम नहीं देख सकते। कोई है!!! जो उन बरकतों में हमारा मुकाबला करे। इसी से।

उत्तम श्रेणी की मुहब्बत के भड़कने के लिए यह आवश्यक है कि सालिक (ईश्वर प्राप्ति हेतु प्रयास करने वाला) जो ख़ुदा तआला की तलाश में है ख़ुदा के सौंदर्य और उपकार पर पूरी तरह सूचना पाए और वास्तव में उसके दिल में यह बैठ जाए कि ख़ुदा तआला अपने अंदर ऐसी विशेषताएं और सौंदर्य रखता है कि जिनकी कोई सीमा नहीं और ऐसा ही उसके इतने उपकार हैं और इतने उपकार करने के लिए वह तैयार है कि उस से बढ़कर संभव ही नहीं और ख़ुदा तआला का शुक्र है कि इस पूर्ण मारिफ़त का सामान इस उम्मत को पूर्ण रूप से दिया गया है। और हम ख़ुदा तआला की विशेषताओं के वर्णन करने में उसकी सेवा में लज्जित नहीं हैं।★ और जहां तक अच्छाइयाँ अनुमान की जा सकती हैं हम वे समस्त विशेषताएं ख़ुदा तआला के अस्तित्व और गुणों में मानते हैं। न हम आर्यों के समान यह आस्था रखते हैं कि ख़ुदा तआला किसी रूह या किसी कण के पैदा करने पर समर्थ नहीं, और न उनके समान हम यह कहते हैं कि नाऊज़ुबिल्ला

★ एक ईसाई यह बात कह कर कि उसका ख़ुदा किसी ज़माने में 3 दिन तक मरा रहा था, अंदर ही अंदर अपने इस कथन से कितना लज्जित होता होगा और उसकी रूह उसको कितना आरोपी ठहराती होगी कि क्या ख़ुदा भी मरा करता है? और जो एक बार मर चुका उस पर कैसे विश्वास किया जाए कि फिर नहीं मरेगा। अत: ऐसे ख़ुदा की ज़िन्दगी पर कोई दलील नहीं बल्कि क्या मालूम कि शायद मर ही गया हो। क्योंकि अब उसमें जीवित लोगों के लक्षण नहीं पाए जाते। वह अपने ख़ुदा-ख़ुदा करने वालों को कोई उत्तर नहीं दे सकता, कोई चमत्कारी काम नहीं दिखा सकता। अत: निस्संदेह समझो कि वह ख़ुदा मर गया है और श्रीनगर मोहल्ला ख़ानयार में उसकी क़ब्र है। रहे आर्य समाज वाले, तो उनकी रूहों का तो कोई ख़ुदा ही नहीं वे स्वयंभू और हमेशा से चली आती और अनादि हैं। इसी से।

वह ऐसा कंजूस है कि शाश्वत मुक्ति किसी को देना नहीं चाहता और न यह कहते हैं कि वह देने पर समर्थ नहीं और न हम आर्य समाज वालों के समान यह कहते हैं कि ख़ुदा तआला की ओर से वह्यी का द्वार बंद है और न हम उनके समान यह कहते हैं कि वह ऐसा कठोर हृदय है कि किसी भक्त की तौबा स्वीकार नहीं करता और एक पाप के लिए करोड़ों योनियों में डालता रहता है। और न हम यह कहते हैं कि वह तौबा (पश्चात्ताप) स्वीकार करने पर समर्थ नहीं। और न हम ईसाइयों के समान यह कहते हैं कि हमारा ख़ुदा ऐसा ख़ुदा है कि वह किसी ज़माने में मर भी गया था और यहूदियों के हाथ में गिरफ्तार भी हुआ और जेल में भी डाला गया और सूली पर चढ़ाया गया और वह एक औरत के पेट से पैदा हुआ और उसके अन्य भाई भी थे। और न हम ईसाइयों के समान नाऊज़ुबिल्ला यह कहते हैं कि वह 3 दिन के लिए गुनाहों का बोझ उतारने के लिए नर्क में भी गया था और वह अपने भक्तों को गुनाहों से मुक्ति नहीं दे सकता था जब तक स्वयं उनके बदले न मरता और 3 दिन के लिए नर्क में न जाता। और न हम ईसाइयों के समान यह कहते हैं कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद वह्यी और इल्हाम बंद हो गया है और अब ख़ुदा तआला के वार्तालाप का द्वार बंद हो गया है क्योंकि ख़ुदा तआला सूरह फातिहा में हमें समस्त नबियों की विभिन्न नेमतों के वारिस ठहराता है और इस उम्मत को खैरुल उमम (सब उम्मतों से श्रेष्ठ) क़रार देता है। अत: निस्संदेह ख़ुदा तआला का सौंदर्य और उपकार जो मुहब्बत का स्रोत है, सबसे अधिक उस पर ईमान लाना हमारे हिस्से में आया है। और मुसलमानों में से निपट अज्ञानी और अभागे वे लोग हैं जो उसके सौंदर्य

और उपकार के इन्कारी हैं। एक ओर तो उसकी सृष्टि को उसके विशेष गुणों में हिस्सेदार ठहरा कर ख़ुदा की तौहीद पर धब्बा लगाते★ और उसके एकत्व के सौंदर्य की चमक को किसी अन्य की भागीदारी के साथ अंधकार से बदलते हैं। और फिर दूसरी ओर आंहज़रत

★मुसलमानों को विशेष रूप से अहले हदीस को तौहीद का बहुत दावा था परंतु अफसोस वे भी इस उदाहरण के पात्र ठहरे कि "मच्छर छानना और ऊंट निगलना।" क्या ऐसे लोगों को हम एकेश्वरवादी कह सकते हैं कि एक ओर तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला के समान वहदहू ला शरीक समझते हैं। वही है जो पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर गया और वही है जो किसी दिन पार्थिव शरीर के साथ धरती पर आएगा और उसी ने पक्षी पैदा किए। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से काफिरों ने क़समें खाकर बार-बार यह कहा कि आप पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर चढ़कर दिखाइए, हम अभी ईमान ले आएंगे। उनको उत्तर दिया गया कि-

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (बनी इस्राइल- 17/94)

अर्थात उनको कह दे कि मेरा ख़ुदा वचन भंग नहीं करता। और उसके कथन के अनुसार पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर नहीं जा सकता, क्योंकि यह बात ख़ुदा के वादे के विपरीत है। कारण यह कि वह फ़रमाता है कि

فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ (अल आराफ- 7/26)

وَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ (अल आराफ़- 7/25)

अत: क्या हम समझें कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर पहुंचाने के समय ख़ुदा तआला को अपना यह वादा याद न रहा या ईसा अलैहिस्सलाम मनुष्य नहीं थे। अगर ईसा अलैहिस्सलाम पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर गए हैं तो क़ुर्आन के कथन के अनुसार अनिवार्य है कि ईसा अलैहिस्सलाम मनुष्य नहीं थे। फिर दूसरी ओर इस्लाम के इन दावेदारों ने दज्जाल की भी वह विशेषताएँ वर्णन की हैं जिन से उसका ख़ुदा होना अनिवार्य ठहरता है। यह तौहीद और यह दावा। अफसोस! इसी से।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाश्वत अध्यात्म लाभ से ऐसा स्वयं को महरूम समझते हैं कि मानो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाऊज़ुबिल्लाह जीवित दीपक नहीं है बलकि मुर्दा दीपक हैं जिनके द्वारा दूसरा दीपक प्रकाशित नहीं हो सकता। वे इक़रार करते हैं कि मूसा अलैहिस्सलाम नबी ज्वलंत दीपक था जिसके अनुसरण से सैकड़ों नबी दीपक बन गए और मसीह अलैहिस्सलाम 30 वर्ष तक उसी का अनुसरण करके और तौरात के आदेशों का पालन करके और मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत का जुआ अपनी गर्दन पर लेकर नबुव्वत के ईनाम से सुशोभित हुए। परंतु हमारे सय्यद व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण किसी को कोई अध्यात्मिक ईनाम प्रदान नहीं कर सका बल्कि एक ओर तो आप इस आयत -

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ (अहज़ाब-33/41)

के अनुसार नरीना औलाद (पुत्र संतान) से जो एक शारीरिक यादगार थी, वंचित रहे और दूसरी और आध्यात्मिक औलाद भी आपको नसीब न हुई जो आपकी आध्यात्मिक विशेषताओं की वारिस होती। और ख़ुदा तआला का यह कथन-

وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ (अहज़ाब-33/41)

निरर्थक रहा। स्पष्ट है कि अरबी भाषा में 'लाकिन' का शब्द इस्तद्राक के लिए आता है अर्थात जो चीज़ प्राप्त नहीं हो सकी उसके प्राप्त करने की दूसरे अंदाज में ख़बर देता है, जिसकी दृष्टि से इस आयत के यह अर्थ हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शारीरिक नरीना औलाद कोई नहीं थी परंतु रूहानी तौर पर आप

की औलाद बहुत होगी और आप नबियों के लिए मोहर ठहराए गए हैं। अर्थात भविष्य में कोई नबुव्वत का कमाल सिवाए आपके अनुसरण की मोहर के किसी को प्राप्त नहीं होगा। अत: इस आयत के ये अर्थ थे जिन को उल्टा करके नबुव्वत के ईनाम से भविष्य में इन्कार कर दिया गया। हालांकि इस इन्कार में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निपट अपमान और तिरस्कार है क्योंकि नबी का कमाल यह है कि वह दूसरे व्यक्ति को प्रतिरूपी तौर पर नबुव्वत के कमाल से लाभान्वित कर दे और आध्यात्मिक मामलों में उसकी पूरी परवरिश करके दिखलाए। इसी परवरिश के उद्देश्य से नबी आते हैं और मां की तरह सत्य के जिज्ञासु को गोद में लेकर ख़ुदा की पहचान का दूध पिलाते हैं। अत: अगर आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास यह दूध नहीं था तो नाऊज़ुबिल्ला आपकी नबुव्वत सिद्ध नहीं हो सकती परंतु ख़ुदा तआला ने तो क़ुर्आन शरीफ में आपका नाम सिराज ए मुनीर (चमकता सूर्य) रखा है जो दूसरों को प्रकाशित करता है और अपने प्रकाश का प्रभाव डालकर दूसरों को अपने समान बना देता है और अगर नाऊज़ुबिल्ला आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में आध्यात्मिक फैज़ नहीं तो फिर दुनिया में आपका अवतरित होना ही बेकार हुआ। और दूसरी ओर ख़ुदा तआला भी धोखा देने वाला ठहरा जिसने दुआ तो यह सिखाई कि तुम समस्त नबियों के कमाल (विशेष गुण) मांगो मगर दिल में हरगिज़ यह इरादा नहीं था कि यह कमाल दिए जाएंगे बल्कि यह इरादा था कि हमेशा के लिए अंधा रखा जाएगा।

लेकिन हे मुसलमानो! होशियार हो जाओ कि ऐसा विचार

निपट मूर्खता और अज्ञानता है। अगर इस्लाम ऐसा ही मुर्दा धर्म है तो किस क़ौम को तुम उसकी तरफ दावत कर सकते हो? क्या इस धर्म की लाश जापान ले जाओगे या यूरोप के सामने प्रस्तुत करोगे? और ऐसा कौन मूर्ख है जो ऐसे मुर्दा धर्म पर आशिक हो जाएगा जो पूर्व धर्मों के मुकाबले हर एक बरकत और आध्यात्मिकता से बेनसीब है। पूर्व धर्मों में औरतों को भी इल्हाम हुआ जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम की मां और मरियम को, मगर तुम मर्द होकर उन औरतों के बराबर भी नहीं। बल्कि हे नादानो!! और आंखों के अंधो!!! हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हमारे सय्यद व मौला (उस पर हज़ारों सलाम) अपने अध्यात्म लाभ की दृष्टि से समस्त नबियों से आगे बढ़ गए हैं क्योंकि पूर्व नबियों का अध्यात्म लाभ एक सीमा तक आकर समाप्त हो गया और अब वे क़ौमें और वे धर्म मुर्दा हैं उनमें कोई जिंदगी नहीं। मगर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आध्यात्मिक लाभ क़यामत तक जारी है। इसीलिए बावजूद आपके इस आध्यात्मिक लाभ के इस उम्मत के लिए ज़रूरी नहीं कि कोई मसीह बाहर से आए बल्कि आपकी छत्रछाया में परवरिश पाना एक सामान्य इंसान को मसीह बना सकता है जैसा कि उसने इस विनीत को बनाया।

अब फिर हम अपनी असल बात की ओर लौट कर लिखते हैं कि इस्लाम ने जो मुक्ति का उपाय प्रस्तुत किया है उसकी फिलॉसफी यह है कि इंसान के स्वभाव में अनादि काल से एक ओर तो एक विष रखा गया है जो गुनाहों की ओर प्रेरित करता है और दूसरी ओर अनादि काल से इंसानी स्वभाव में उस विष का

विषनाशक रखा गया है जो ख़ुदा तआला की मुहब्बत है। और जब से इंसान बना है यह दोनों शक्तियां उसके साथ चली आई हैं। विषैली शक्ति इंसान के लिए अज़ाब का सामान तैयार करती है और फिर विषनाशक शक्ति जो ख़ुदा की मुहब्बत की शक्ति है, वह गुनाह को जला देती है जैसे कि घास फूस को आग जला देती है। यह कदापि सम्भव नहीं कि गुनाह की शक्ति जो अज़ाब का सामान है वह तो अनादि से इंसान के स्वभाव में रख दी गई है परंतु गुनाहों से मुक्ति पाने के लिए जो सामान है वह कुछ थोड़ी देर से पैदा हुआ है अर्थात केवल उस समय से जबकि ईसा मसीह सूली पर चढ़ाए गए। ऐसी आस्था वही स्वीकार करेगा जो अपने दिमाग में तनिक भी सद्बुद्धि नहीं रखता बल्कि यह दोनों सामान अनादि से और जबसे कि इंसान पैदा हुआ इंसानी स्वभाव को दिए गए हैं। यह नहीं कि गुनाह के सामान तो पहले से ख़ुदा तआला ने इंसानी स्वभाव में रख दिए परंतु मुक्ति देने की दवा प्रारंभिक काल में उसको याद न आई, 4000 वर्ष बाद सूझी।

अब हम इस लेख को समाप्त करते हैं और केवल ख़ुदा के लिए आपको सुझाव देते हैं कि अगर आप जीवित बरकतों के इच्छुक हैं तो उस मसीह का नाम न लो जो एक ज़माना हुआ कि मृत्यु पा चुका और एक कण भर भी उसकी जीवित बरकतें मौजूद नहीं और उसकी क़ौम ख़ुदा की मुहब्बत की मस्ती की बजाए शराब की मस्ती में सबसे अधिक आगे बढ़ गई है और बजाए इसके कि आसमानी माल को लें सांसारिक माल पर लट्टू हैं, चाहे जुआ से ही कमाया जाए। बल्कि चाहिए कि मुहम्मदी मसीह की जमाअत में

सम्मिलित हो जाओ जो 'इमामुकुम मिन्कुम'* है और नक़द बरकतें प्रस्तुत करता है। बाक़ी आपको अधिकार है।

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद

★ ★ ★

* **इमामुकुम मिन्कुम-** अर्थात तुम्हारा इमाम तुम्हीं में से है- अनुवादक

ख़ुदा तआला की दरगाह में दुआएँ

लेखक की ओर से

اے سرو جان و دل و ہر ذرّہ ام قربانِ تو
بردلم بکشا زِ رحمت ہر درِ عرفانِ تو

अनुवाद- हे वह कि तुझ पर मेरा सर और जान और दिल और प्रत्येक कण क़ुर्बान है, मेरे दिल पर अपनी रहमत से अपनी मारिफ़त (पहचान) का हर द्वार खोल दे।

فلسفی کز عقل مے جوید ترا دیوانہ ہست
دور تر ہست از خردہا آں رہِ پنہانِ تو

अनुवाद- दार्शनिक दीवाना है जो तुझे बुद्धि के ज़ोर से ढूंढता है तेरा गुप्त मार्ग बुद्धि से बहुत दूर है।

از حریم تو ازیناں ہیچ کس آگہ نشد
ہر کہ آگہ شد، شداز احسانِ بے پایانِ تو

अनुवाद- यद्यपि उनमें से तेरे दरबार का कोई भी ज्ञानी नहीं जो भी परिचित हुआ वह तेरे असीमित उपकारों के कारण हुआ।

عاشقانِ روئے خودرا ہر دو عالم مے دہی
ہر دو عالم ہیچ پیشِ دیدۂ غلمانِ تو

अनुवाद- तू अपने आशिकों को दोनों लोक प्रदान कर देता है परंतु तेरे ग़ुलामों की नज़र में दोनों लोक तुच्छ हैं।

یک نظر فرما کہ تا کوتہ شود جنگ و جدال
خلق محتاج است سوئے جذبۂ بُرہانِ تو

अनुवाद- कृपा दृष्टि कर ताकि लड़ाई-झगड़ा समाप्त हो, सृष्टि तो तेरे तर्कों के आकर्षण की मोहताज है।

یک نشاں بنما کہ تا نورت درخشد درجہاں
تا شود ہر منکر ملت محامد خوانِ تو

अनुवाद- एक निशान दिखा ताकि तेरा नूर दुनिया में चमके और ताकि प्रत्येक इस्लाम का इन्कारी तेरा प्रशंसक हो जाए।

گر زمیں زیر و زبر گردد ندارم ہیچ غم
غم ہمیں دارم کہ گُم گردد رہِ رخشانِ تو

अनुवाद- अगर ज़मीन तहस-नहस हो जाए तो मुझे कोई ग़म नहीं, मुझे तो यही ग़म है कि कहीं तेरा चमकता हुआ मार्ग गुम न हो जाए।

گفتگو و بحث در دیں درد سربسیار ہست
قصّہ کوتہ کن بآیاتِ عظیم الشانِ تو

अनुवाद- दीन के मामले में बातचीत और शास्त्रार्थ बड़ी सरदर्दी है तू महान चमत्कार दिखाकर क़िस्सा ही समाप्त कर दे।

از زلازل جُنبشے دِہ فطرتِ اغیار را
تا مگر آیند ترساں سوئے آں ایوانِ تو

अनुवाद- दुश्मनों की फितरत को भूकंप दिखा कर हिला डाल ताकि वे

डर कर तेरे दरबार की ओर आ जाएं।

چشمۂ رحمت رواں کن در لباسِ زلزلہ
تابکے سوزد بغم ایں بندۂ گریانِ تو

अनुवाद- भूकंप के पर्दे में रहमत का स्रोत जारी कर, विलाप करने वाला तेरा बंदा कब तक ग़म में जलता रहे।

★ ★ ★

पारिभाषिक शब्दावली

अर्श- सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।

अह्ले किताब- यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।

अज़ाब- अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।

अलैहिस्सलाम- उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।

आयत- पवित्र क़ुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।

इस्राईल- अल्लाह का वीर या सैनिक। याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्राईल (अर्थात इस्राईल की संतान) कहा जाता है। फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्राईल रखा है।

ईमान- अर्थात विश्वास या धार्मिक आस्था। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।

उम्मत- क़ौम। किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।

उम्मती नबी- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।

उलमा- इस्लामी धर्मज्ञ।

कश्फ़- जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।

काफ़िर- सच्चाई का इन्कार करने वाला, इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।

कुफ़्र- सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।

ख़लीफ़ा- उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका

स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।

ख़िलाफ़त- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है।

जिब्रील - ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

जिहाद - प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।

तक़वा - निष्ठापूर्वक तथा अल्लाह सेदारते हुए उसकी आज्ञा का पालन करना । संयम, धर्मपरायणता।

तौरात - यहूदियों का धर्मग्रंथ।

दज्जाल- झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।

दुरूद व सलाम -हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।

नबी- लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है, अवतार।

नुबुव्वत - नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।

नूर- अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।

नेमत - अल्लाह की देन।

पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।

बनी इस्त्राईल- इस्त्राईल की संतान। (इस्त्राईल शब्द भी देखें)

बैअत- बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।

मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।

मुनाफ़िक़- कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु

दिल से उसको अस्वीकार करने वाला हो।

मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।

याजूज-माजूज- अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।

रसूल- अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत।

रज़ियल्लाहु अन्हु-अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।

रहिमहुल्लाहु- उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।

रूह- आत्मा।

रूहुल-क़ुदुस- पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

ला'नत - अभिशाप, अमंगल कामना।

वह्यी - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। पवित्र क़ुरआन का अवतरण वह्यी के द्वारा हुआ है।

शरीयत - इस्लामी धर्मविधान।

शिर्क- अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।

सलीब - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम-उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।

सूरः / सूरत- पवित्र क़ुर्आन का अध्याय। पवित्र क़ुर्आन में 114 अध्याय हैं।

हज़रत - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया।

हिदायत- सन्मार्ग प्राप्ति।

* * *